सत्यमेव जयते

असंशोधित

बिहार विधान–सभा वादवृत्त

सरकारी प्रतिवेदन

23 मार्च, 2018

टर्न-10/23-03-2018/ज्योति

(अंतराल के बाद)

(इस अवसर पर माननीय अध्यक्ष महोदय ने आसन ग्रहण किया)

अध्यक्ष : सभा की कार्यवाही प्रारम्भ की जाती है ।

वित्तीय कार्य

अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, कला संस्कृति एवं युवा विभाग के अनुदान की मांग पर वाद-विवाद, सरकार का उत्तर एवं मतदान होगा । इसके लिए 3 घंटे का समय उपलब्ध है । विभिन्न दलों को उनकी सदस्य संख्या के आधार पर समय का आवंटन निम्न प्रकार किया जाता है, इसी में से सरकार को उत्तर के लिए भी समय दिया जायेगा ।

राष्ट्रीय जनता दल	-	59 मिनट
जनता दल यूनाईटेड	-	52 मिनट
भारतीय जनता पार्टी	-	39 मिनट
इंडियन नेशनल कौंग्रेस	-	20 मिनट
सी.पी.आई.(एम.एल.)	-	2 मिनट
लोक जन शक्ति पार्टी	-	2 मिनट
हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा	-	1 मिनट
राष्ट्रीय लोक समता पार्टी	-	2 मिनट
निर्दलीय	-	3 मिनट

माननीय मंत्री, कला, संस्कृति एवं युवा विभाग अपनी मांग प्रस्तुत करें ।

श्री कृष्ण कुमार ऋषि, मंत्री : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि :

'' कला, संस्कृति एवं युवा विभाग '' के संबंध में 31 मार्च, 2019 को समाप्त होने वाले वर्ष के भीतर भुगतान के दौरान जो व्यय होगा, उसकी पूर्त्ति के लिए 1,39,11,86,000/-(एक अरब उनचालिस करोड़ ग्यारह लाख छियासी हजार) रुपये से अनधिक राशि प्रदान की जाय ।''

यह प्रस्ताव राज्यपाल की सिफारिश पर किया गया है ।

अध्यक्ष : इस मांग पर माननीय सदस्य श्री भोला यादव, श्री रामदेव राय, श्री समीर कुमार महासेठ, श्री आलोक कुमार मेहता , डा0 मो0 नवाज आलम एवं श्री महबूब आलम से कटौती प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं जो व्यापक हैं और जिन पर सभी माननीय सदस्य विचार विमर्श कर सकते हैं । माननीय सदस्य, श्री भोला यादव का प्रस्ताव प्रथम है अतएव माननीय सदस्य, श्री भोला यादव अपना कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत करें ।

(माननीय सदस्य श्री भोला यादव-अनुपस्थित)

(माननीय सदस्य श्री रामदेव राय -अनुपस्थित)

श्री समीर कुमार महासेठ ।

श्री समीर कुमार महासेठ : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि :

'' इस शीर्षक की मांग 10/- रुपये से घटाई जाय । ''

अध्यक्ष महोदय, मैं कला, संस्कृति एवं युवा विभाग की मांग पर लाए गए कटौती प्रस्ताव के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ ।

अध्यक्ष : आप कटौती प्रस्ताव के पक्ष में नहीं बल्कि अपने प्रस्ताव के पक्ष में, आप ही प्रस्ताव कर रहे हैं, आपका ही प्रस्ताव हुआ ।

श्री समीर कुमार महासेठ: अच्छा अच्छा, मैं प्रस्ताव के पक्ष में बोल रहा हूँ । महोदय, बिहार की संस्कृति इस देश की सर्वोत्तम संस्कृतियों में एक है । बिहार की धरती कर्ण, जरासंध, माँ सीता महान तपस्वी राजा जनक से पावन हुई है । यह भूमि वाल्मीकि की तपस्या से भी पवित्र हो चुकी है । महोदय, चाणक्य, विद्यापति, मंडन मिश्र, भारती, मैत्रेयी जैसे विद्वानों और विदुषी की धरती बिहार है । इन ज्ञानियों का ही असर रहा है कि बिहार में नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला जैसे बौद्ध महाविहार रहे हैं जहाँ ज्ञान प्राप्त करने के लिए देश विदेश के विद्वान आते रहे हैं । यहाँ से लिच्छवी गणराज्य के रुप में प्रथम लोकतंत्र का प्रादुर्भाव हुआ है । महोदय, बिहार की धरती है जिसने मोहन दास करमचंद गांधी को महात्मा और बापू बना दिया । आजादी के दीवानों की इस राज्य में कमी नहीं रही है । उन्होंने अपनी शहादत देकर बिहार के संस्कार को देश में अमर किया है । महोदय, इतनी गौरवशाली परम्परा एवं संस्कृति के धनी बिहार आज कहाँ है ? कहाँ खो गयी है उसकी विद्या , कहाँ चली गयी है संस्कृति? महोदय, हमने उसे बचाने के लिए कोई पहल नहीं की और जैसा आपसे उम्मीद थी वह भी नहीं हो पा रही है महोदय, मैं बताना चहता हूँ कि बिहार की संस्कृति, लोक नृत्य लोक नाट्य लोक गीत अपनी अलग पहचान रखता है । चैतावर, पूरबी, होली, निर्गुण आदि जैसे लोक गीतों का अस्तित्व खतरे में है । अश्लीलता लोक गीत पर भारी पड़ रहा है । शारदा सिन्हा, विंध्यवासिनी देवी, भिखारी ठाकुर आदि की लोक कलाएं अब दम तोड़ रही हैं उसका एक मात्र कारण है सरकार की कला के प्रति उपेक्षा । महोदय, पुराने खेल मृतप्राय हो गए हैं जैसे कबड्डी, गिली डंडा, कुश्ती खोखो लुका छिपी आदि खेल हमारी बिहार संस्कृति के परिचायक रहे हैं इसमें कोई पूंजी नहीं लगती है । लेकिन उपेक्षा के मारे ये खेल हमारे ग्रामीण जीवन से विलुप्त हो रहे हैं । महोदय, किसी राज्य की पहचान उसकी संस्कृति से ही होती है । संस्कृति का निर्माण कोई एक वर्ष में नहीं होता है । उसके लिए पीढ़िया गुजर जाती है हमें हमारी पीढ़ियों ने जो संस्कृति समर्पित की थी उसे हम बचा नहीं सके ।

संस्कृति को बचाने के लिए ठोस नीति एवं योजना का केवल निर्माण नहीं होना चाहिए बल्कि उन्हें क्रियान्वित भी किया जाना चाहिए । उभरते हुए कलाकारों के विकास में आज तक जिस तरह से हम उम्मीद करते थे कि कैसे उनको चिन्हित करके बढ़ाने का कोई कारगर योजना नहीं बन पाया साथ ही हम समझ सकते हैं कि जो राज्य में जो 18 से 23 वर्ष की आयु के बच्चे की संख्या 1 करोड, 14 लाख, 3 हजार 681 है परन्तु यहाॅं की कोई युवा नीति नहीं बन पायी जिसमें युवाओं के सर्वांगीण विकास की अवधारण हो अब आपकी सरकार एक दो वर्ष की नहीं रही, 12 वर्ष से अधिक हो गए हैं 12 वर्ष में तो नदी भी अपना बेड बदल देती है लेकिन युवाओं के लिए आपकी कोई कार्यशैली अलग से विकसित नहीं हुई । महोदय, बिहार में 15 से 29 वर्ष तक के बच्चों में 17.5 प्रतिशत बेरोजगारी है जबकि राष्ट्रीय पैमाना 13 प्रतिशत है जहाॅं पर कम से कम 5 प्रतिशत 6 प्रतिशत से हम पीछे चल रहे हैं । यह स्नातकों में बेरोजगारी का प्रतिशत 25.7 प्रतिशत है । बिहार के 45 प्रतिशत युवा कृषि पर निर्भर रहने लगे हैं और इतना ही नहीं, रोजगार हेतु उद्योग नहीं है । पूरे बिहार में 3345 उद्योग हैं । आज की परिस्थिति में पिछले दिन भी आप देखे होंगे कि जो किसान अपना पैदावार उगाने के लिए आप पर निर्भर है लेकिन कहीं न कहीं सरकार की मार उनको पड़ रही है और बिहार में इतना अगर हमारा संस्कृति उज्ज्वल रही तो क्या कारण है कि जिला वार आर्ट गैलरी आजतक नहीं खोली गयी । हम उम्मीद करते हैं अपने मधुबनी में भी, आपसे कि कहीं से न कहीं एक आर्ट गैलरी और एक ओपेन थियेटर खुले, यह अपेक्षा करते हैं और कहीं न कहीं कलाकारों के संवर्द्धन हेतु कोई अलग से कार्य करने की बात है तो वह दूर रही कलाकारों के लिए अलग से कोई डाटा बेस भी सरकार के पास उपलब्ध नहीं है । हमारे बिहार में कितने राज्य में कलाकार हैं जबकि कहीं भी दूसरे प्रदेश का हम देखते हैं गुजरात या दूसरे प्रदेश के लोग यहाॅं आकर कोई भी ऐसा कार्यक्रम होता है तो बाहर के लोग आते हैं और जिन चीजों के लिए हम चिन्हित करते हैं वह कार्यक्रम हमें मिलता है । लेकिन प्रदेश में ऐसा कोई प्लान डिपार्टमेंट के पास नहीं है जिससे हमारे लोग कहीं भी बाहर जांय और उनको वो सुविधा मिल सके । हम उम्मीद करते हैं कि जो खेल संघों का अनुदान पारदर्शी होना चाहिए था कहीं न कहीं बिहार सरकार की गलत नीति के चलते जो भी चाहे क्रिकेट हो, फुटबौल हो प्रदेश में जितने भी खेल हो रहे हैं हमको बिहार सरकार से उनको पैसा नहीं मिल पाता है । उसका मुख्य कारण है कि सरकार यह कहती है कि आप हमारे यहाॅं रजिस्ट्रेशन कराईये जबकि इन्टरनेशनल नेशनल लॉ है कि जहाॅं पर फुटबौल का अलग संघ है देश का । क्रिकेट का औल इंडिया संघ अलग हैं अगर हम आई.सी.सी. से रजिस्टर्ड हैं और बिहार में रजिस्ट्रेशन करायेंगे तो मेरी मान्यता समाप्त हो जायेगी लेकिन बिहार सरकार को अपने इस

डिपार्टमेंट को अपने यहाॅ जो गलतियाॅ हो रही हैं अगर पिछले इतने दिनों में हम किस खेल को प्राथमिकता देकर आगे बढ़ाये इसपर अगर आप ध्यान देंगे तो आपको लगेगा कि पटना का जो इतिहास रहा है यहाॅ कम से कम पाॅच फुटबौल ग्राउन्ड ऐसा था जहाॅ पर सालों भर यहाॅ लोग खेलेते थे । आप कहीं गांधी मैदान जाते तो सालो भर खेलेते हुए पाते थे, दो हजार चार हजार लोग कहीं से भी आते थे वहाॅ खेल देखने के लिए खेल प्रेमी पहुंच जाते थे । पिछले सत्र में भी हमलोगों ने यह प्रश्न उठाया था लेकिन अभी भी सरकार से हम अपेक्षा करते हैं कि कम से कम तीन से चार सालों भर खेलने के लिए यहाॅ फिल्ड की आवश्यकता है । क्रमशः...

टर्न-11/23.3.2018/बिपिन

श्री समीर कुमार महासेठः क्रमशः... फिल्ड का दूसरे तरह का उपयोग होने लगा है और जो स्पोर्ट्स प्रेमी हैं, फुटबॉल डेली प्रैक्टिस का चीज है, मॉर्निंग, शुभ मुहर्त्त में लोग निकलते हैं । उसके बाद दिन भर कार्यक्रम में मशगूल रहते हैं । तब जाकर फुटबॉल में हमारा देश में नाम होता है । इस बार संयोग से हम यह कह सकते हैं कि दिव्यांगों का जो बिहार में सबसे ज्यादा जो प्रतिशत् बढ़ा है, यह पर्यावरण के कारण हो, जिन कारणों से हो, लेकिन प्रदेश स्तर से लेकर जिला स्तर पर दिव्यांगों के लिए कोई भी ऐसा स्टेडियम नहीं है कि कहीं पर ऐसे बच्चे खेल सकें । लगभग 50-60 लाख की आबादी हमारे दिव्यांगों का हो गया है बिहार में लेकिन उसके प्रति थोड़ा भी सरकार अपने आप में अगर पूरे नेशनल, इंटरनेशनल कोई खेलकर आता है, दूसरे प्रदेश को देख लीजिए कि एक करोड़ से दो करोड़ उसको इंटरनेशनल एवार्ड लेकर आता है, गोल्ड मेडेल तो उसको मिलता है और हमारे यहां दिव्यांगों को कितना मिलता है, 4100 रूपया, 5100 रूपया । आप सोच लें कि जिन बच्चों के साथ एक उनका अभिभावक उसके साथ जाता है खेलाने के लिए, कहीं से, कटिहार से आवे, दरभंगा से आवे, बिहार के किसी कोने से आवे, उन दिव्यांगों के साथ बच्चा खेलने के लिए जब आता है और घर लौट कर जाता है तो उसको केवल 4100 रूपया मिलता है और वही इंटरनेशनल खेलकर लोग दूसरे प्रदेश में गये तो वहां उनको 40 लाख, 50 लाख मिला । तो निश्चित तौर पर यह जो बीच का गैप है, इसको सरकार को देखना चाहिए । सरकार अगर है तो हम समझते हैं कि अपेक्षा भी है और सरकार अगर इस तरफ ध्यान नहीं देंगे तो पूरे देश में हमारे बिहार का नाम कहीं उन चीजों में नहीं आ जाए, चूंकि विकलांगता में, दिव्यांग में सबसे ज्यादा बिहार पूरे देश में आ गया है । कहीं-न-कहीं एलर्ट होने की जरूरत है । आवश्यकता इस बात की है कि आखिर क्यों और उनके प्रति जो हमारा होना चाहिए, चूंकि वो ऐसे बच्चों को सालो भर खेलाकर, चाहे पंचायत में हो, चाहे जिला में हो, स्टेट में, जब तक सालो भर नहीं खेलाएंगे, तब तक वो बेचारे मानसिक विकृति में कहीं-न-कहीं वह सब

परिवार के साथ-साथ देख लें तो आपको लगेगा कि सरकार को संवेदनशील होना चहिए, इस पर ध्यान देना चाहिए और सारी चीजें राजगीर ले जाना, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के स्टेडियम की स्वीकृति के बावजूद अभी तक कार्य में अपेक्षित प्रगति नहीं हुई है। हम समझते हैं कि जो भी आपका कार्यक्रम हो रहा है, पिछले बार क्रिकेट पर सदन में चर्चाएं हुई थी और क्रिकेट के लिए कर्णांकित करने के लिए हुआ था कि मोइनुल हक स्टेडियम को किया जाए और शायद मोइनुल हक स्टेडियम को करने के बाद, इसके बावजूद भी राजगीर जैसे जगह पर, ठीक है नेशनल, इंटरनेशनल खेलाने के लिए आप कर रहे हैं लेकिन यहां का जो है स्टेडियम, कम-से-कम उसका तो आप खेल के प्रति जो आपको जागरूक रखते हैं और फुटबॉल में हमने कहा कि तीन से चार, हमने पिछले बार भी कहा था और हमेशा, बार-बार लेकिन कहीं-न-कहीं सरकार ध्यान नहीं दे रही है । गर्दनीबाग का फील्ड जो है वहां हमेशा खेला जा सकता है । यहां पर सामने आर. ब्लॉक में है, हमेशा खेला जा सकता है । कोई आवश्यकता नहीं है, सिर्फ आप उस फील्ड को उस रूप में बना दीजिए । बच्चे आएंगे और खेलेंगे । इस बार भी हमारे बिहार का सात बच्चा नेशनल खेलने गया था और सारे लोग चैम्पियन बन कर आए । पटना फुटबॉल एसोसिएशन पटना में पूरे बिहार में चैम्पियन हुआ । उसमें से सात लोग गए थे खेलने के लिए । इस बार भी स्पेन जाना है, विदेश जाना है । हम कह सकते हैं कि आगे आने वाले समय में जब तक हमारे यहां प्राइम स्पोर्ट्स पर ध्यान नहीं जाएगा, तब तक शायद उस रूप में, चाहे उसको जो भी फंडिंग करने की आवश्यकता हो, उसके लिए है । बिहार क्रिकेट एसोसिएशन पर भी अभी थोड़ा जो पिछले कुछ समय से कुछ दुर्दशा ही चल रहा है, यहां पर जो भी हैं, अगर यहां के बच्चे नहीं खेल पाते हैं, बाहर के लोग खेलते हैं । हमें पता चला कि लखनराज जो मुंबई का था, वह यहां से खेला लेकिन उस चयन में भी जो डिफरेंसेज हुए, उसके चलते मिथिलेश रंजन जी, सुनील कुमार जी, ऐसे तीन चयनकर्त्ता इस्तीफा दे दिए ।

(इस अवसर पर माननीय सभापति महोदया,डॉ0 रंजू गीता ने आसन ग्रहण किया)

महोदय, हम मांग करते हैं कि आपका, माननीय मंत्री जी, आप इस पर ध्यान दें । ध्यान देने से कम-से-कम इतना तो होगा कि कम-से-कम जो स्थिति है स्पोर्ट्स का, बिहार में डेवलप होगा । हम समझ सकते हैं कि आप कबड्डी में चालीस लाख रूपया दे रहे हैं । फुटबॉल में चार रूपया भी नहीं दे रहे हैं । आप दूसरे खेलों में क्या दे रहे हैं ? तो आप अपना देखिए न कि सिस्टम आपने ऐसा बनाया है । सभी खेल रहे हैं । सारा आपके यहां रजिस्ट्रेशन करा लेगा जिसका नेशनल इंटरनेशनल, हम समझते हैं कबड्डी में देना उचित है । हम यह नहीं कह रहे हैं कि नहीं दीजिए, लेकिन फुटबॉल में देना क्या गलत है ? क्या क्रिकेट में देना गलत है ? दूसरे अन्य खेल में पैसा देना गलत है ? आप ध्यान देंगे तो निश्चित तौर पर उधर आपका ध्यान आकृष्ट कर रहे हैं

और निश्चित तौर पर बिहार में भी जो खेल का अभी शुरूआत हुआ है आपके टाइम में, अभी सभी जगह, जिला स्तर से, सभी जगह अच्छा मैसेज जा रहा है । वातावरण बन रहा है । आप पैसा दें ? निश्चित तौर पर यह आगे बढ़ेगा ।

हम समझ सकते हैं कि पंचायती राज का भी आज है । उसपर हम सिर्फ दो बात कहना चाहेंगे । पंचायती राज मंत्री जी यहां पर हैं । आज क्या कारण है कि जो अधिकार संविधान प्रदत्त है, उसका हस्तान्तरण करने में कौन-सी दिक्कतें आ रही हैं ? कभी आपने ध्यान नहीं दिया । अभी सभी जगह आपने मुखिया के अधिकार का हनन किया है, काटा है । किसने किया है ? वह आपकी सरकार ही बता सकती है । सात निश्चय में कौन-सी दिक्कत थी जो मुखिया का अधिकार आप कम किए ? हम समझते हैं कि कहीं-न-कहीं यह राजनीति से ऊपर की चीज हो रही है । सरकार यह सोचे कि जिस ढंग से हमारा भी संविधान में हक है, विधायक बनना, एम.पी., एम.एल.ए. बनना, संविधान में पंचायती राज का भी अधिकार है । उसके बारे में थोड़ा-सा आप कम-से-कम दूसरे प्रदेश में जो हो रहा है, आप उसके बारे में भारत सरकार से इतना पैसा लेते हैं लेकिन खर्चा क्या कर रहे हैं ? मानदेय भत्ता भी उनलोगों तक नहीं पहुंचा है । कितने दिनों से मानदेय भत्ता बाकी है, इसका विश्लेषण खुद ही कर लें । हम समझ सकते हैं कि जब तक पंचायती राज का, जो आज की स्थिति में है, पहले से डे-बाई-डे, हम समझते हैं, लोग निराशावादी की तरफ जा रहे हैं । आप उनको आशा दिखाने का काम करें । पंचायती राज में और क्या कर सकते हैं ? आप खुद सोच सकते हैं । आपमें क्षमता है, सोच है, लेकिन वह आधार हम कह सकते हैं जिन कारणों से आप की यह राजनीति हो रही है । भविष्य में शायद, आपको हम एलर्ट कर रहे हैं कि आप उसमें न पड़ें, आप यह सोच लें कि संविधान प्रदत्त जो उनका अधिकार है, सिर्फ वह सरकार से हम अपेक्षा करते हैं कि आप दे दें । इसके बाद पंचायती राज अपने आप इस्टैब्लिश हो जाएगा ।

आज के विषय में खान एवं भूतत्व विभाग भी है । हम समझ सकते हैं कि जिन चीजों को सरकार छूती है, जनता त्राहिमाम-त्राहिमाम करने लगता है । क्या कारण है कि जहां 12सौ, 14सौ रूपए सी.एफ.टी. मिलता था बालू, आज वह कहां चला गया? सरकार बार-बार कहती है कि हम सस्ते दर पर देंगे लेकिन स्थिति आजतक आपके कंट्रोल में नहीं आया । एक भी जगह पर किसी गांव में हो, किसी पंचायत में हो, किसी अनुमंडल में हो, किसी जिला में हो, आज तक आपका सही जगह पर न तो बालू है, न चिप्स है और इस तरह से जो हालात हैं, आप समझ सकते हैं कि इस पर काम करने वाले कौन हैं ? सबसे ज्यादे वो गरीब तबका है जो लेबर कहलाता है । आज कहीं भी चले जाइए, पहले आपकी सरकार बहुत अच्छे ढंग से काम कर रही थी तो लोग बाहर से आपके यहां बिहार में लौट रहे थे, आज पुनः स्थिति-परिस्थिति में बदलाव

हुई है और दुगुना भाड़ा देकर पुनः लोग पंजाब, दिल्ली, मुंबई जा रहे हैं । इसकी बहुत ही आवश्यकता है कि पिछले आठ महीने से आपका कहीं नहीं सुधरा है, कहीं भी डम्प नहीं खुला है, कहीं भी सरकारी काम नहीं हो रहा है। हम कह सकते हैं कि आप जब इसका विश्लेषण करेंगे, आपका एक भी मकान, एक भी मनरेगा का काम, एक भी इंदिरा आवास का काम, एक भी शौचालय का काम कहीं अच्छे ढंग से नहीं हो रहा है। बालू का मैटेरियल ही सही मिलेगा तो अच्छा काम कहां मिलेगा । यह थ्रेट पर्सेप्शन है कि जो जो भूकंप का इलाका है, उस जगह पर आप ध्यान दें । कम-से-कम 23 जिला ऐसा है जहां भूकंप के आधार पर आपको ध्यान देना चाहिए था । जहां मजबूत बनाने की बात होनी चाहिए थी । आपकी गलत नीति के चलते सब जगह, अपने-अपने घर में भी लोग ज्यादा महंगा, थ्री टाइम्स, फोर टाइम्स महंगा बालू खरीद कर मकान बना रहे हैं और फिर भी कमजोर मकान बना रहे हैं । हम समझते हैं, यह थ्रेट पर्सेप्शन कहीं से ठीक नहीं है आपके लिए ।

हमलोग मिथिलांचल क्षेत्र से आते हैं । हम मानते हैं कि नेपाल का पानी ही हमको तबाह करता है और हम वहां पर जो मकान बना रहे हैं, जो भी चीज बना रहे हैं, उसका उचित मूल्य, अगर उसको समय-सीमा के अंदर कराएंगे, हम उम्मीद करते हैं कि आप समय, टारगेट दें कि पंद्रह दिन, एक महीना के अंदर सभी जगह उचित डम्प खुल जाए और जिनको जो आवश्यकता है, वह ले । अब बताइए, लोग अभी मधुबनी में हमारे यहां कहते हैं कि....क्रमशः

टर्नः 12/कृष्ण/23.03.2018

श्री समीर कुमार महासेठ (क्रमशः) अभी लोग मधुबनी में कहते हैं कि 8 कि0मी0, 12 कि0मी0 बालू ठेला से ले जाओ, बैलगाड़ी से लाओ । अब बताईये समय है बैलगाड़ी से 12 कि0मी0, 16 कि0मी0 बालू ले जाने का ? कुछ कहने पर सरकार को लगता है कि हम कहीं गलत कह रहे हैं, गलत बयानी कर रहे हैं । हम तो एक आई ओपेनर की तरह ही कह रहे हैं, जब आप बजट में इतना पैसा खर्चा कर ही रहे हैं तो विजनरी आप क्यों नहीं हो रहे हैं? सारे अच्छे-अच्छे लोग अगर मंत्री बनाये गये हैं तो काम का निष्पादन क्यों नहीं हो रहा है ? क्या केवल हम इल्जाम लगावें कि ब्यूरोक्रेसी के चलते गलती हो रही है ? क्या इल्जाम लगावें कि मंत्रिमंडल की गलती से हो रही है ? जनता रो रही है । हम तो सिर्फ एक ही बात कह रहे हैं कि हमारे यहां की जनता रो रही है । बिहार की जनता रो रही है । उनका आंसू कैसे पोंछे, सिर्फ इस बात की चर्चा करने के लिये खड़े हैं । इन्हीं बातों को रखते हुये अंत में हम यह उम्मीद करते हैं कि जो मधुबनी के लिये मैंने कहा है, आग्रह किया है कि समय-सीमा के अंदर हमारे यहां तीनों विभाग अपने-अपने यहां से कुछ देखेंगे कि जो हमने अभी कहा है, चाहे वह स्टेडियम

की बात है । हमारे यहां रहिका ब्लौक पड़ता है, 10 पंचायत मेरे पास है और 10 पंचायत बिस्फी में है, अगर एक वहां स्टेडियम बन गया, पहले से बन गया, हम तो अपने चाह रहे हैं मकसुदा में बनाने का, तो आपका कानून है कि हम एक प्रखंड में एक ही बनायेंगे तो आप दो विधान सभा क्यों कर दिये ? पहले जो विधायक जी थे, वह तो अपना बना लिये । अब महरूम हम हो रहे हैं । इस समस्या को आपको समझना पड़ेगा । सबसे ज्यादा जहां जो आवश्यकता है, अगर मैं कह सकता हूं कि मैं मकसुदा इसलिए बनाना चाहता हूं कि मैं वहां सालोभर खेल करवाता हूं और सालोभर के आधार पर हक जो आधार बनता है उसके हिसाब से भी आपको देना चाहिए । अगर आप रोड का डिस्ट्रीब्यूशन कर रहे हैं तो आप देखेंगे न कि कितना एरिया है ? अगर सीतामढ़ी में जहां जितना आवश्यकता है, मधुबनी का एरिया ज्यादा है, दो पार्लियामेंट पड़ता है, आप कहियेगा वही चीज तो कैसे होगा ? कोई फूड एण्ड सिविल सप्लाई का मामला है कि इतनी जनसंख्या पर इतना देंगे । तो उसी ढंग से रोड के मामले में, हरेक चीज के मामले में केवल आप ध्यान दें और जहां पर पहली बार हम विधायक बने हैं, हमलोगों के साथ समस्या है, उस ब्लौक में पहले से कोई रहे हैं, उसके आधार पर उनका बना है । इस बात को कह कर हम अपनी बात समाप्त करते हैं । धन्यवाद ।

सभापति (डॉ रंजू गीता): आपको बहुत-बहुत धन्यवाद । आपने अपनी समय-सीमा में अपनी बात को समाप्त किया । माननीय सदस्य श्री लक्ष्मेश्वर राय । आपका समय है 15 मिनट ।

श्री लक्ष्मेश्वर राय : सभापति महोदया, मैं सरकार द्वारा प्रस्तुत अनुदान मांग के पक्ष में और विपक्ष द्वारा प्रस्तुत कटौती प्रस्ताव के विरोध में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं । महोदया, न्याय के साथ जो विकास अभी बिहार में हो रहा है, उसी परिप्रेक्ष्य में कला, संस्कृति एवं युवा विभाग जो बहुत क्रियाशील है, खासकर अपनी संस्कृति और धरोहर, बिहार की अस्मिता, बिहार की जो अपनी पौराणिक संस्कृति और इतिहास था, उसको आगे लाने में अपनी बड़ी भूमिका अदा कर रहे हैं । खासकर युवा की आबादी के लिहाज से बिहार तीसरा बड़ा राज्य है। राज्य के 1.75 करोड़ युवाओं की राज्य की कुल जनंसख्या में 16.8 प्रतिशत हिस्सा है महोदय, 87 प्रतिशत युवा ग्रामीण क्षेत्र में रहते हैं । अत: लाखों युवाओं को सशक्तीकरण और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिये राज्य सरकार ने पहला निश्चय के तहत 5 महत्वाकांक्षी योजनाओं को शुरू किया है । आर्थिक हल युवाओं के बल के तहत खासकर विद्यार्थी क्रेडिट कार्ड योजना, मुख्यमंत्री निश्चय सहायता भत्ता योजना, कौशल युवा योजना, बिहार स्टार्ट अप नीति, सभी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में वाई-फाई, सभी क्षेत्रों में खासकर सात निश्चय है, नई पीढ़ी को नया रूप देना, जो मुख्यमंत्री जी का सपना है कि सुंदर बिहार हर क्षेत्र में बने, सात निश्यच में जो पहला निश्चय है, हमको लगता है कि आनेवाला जो बिहार होगा, इस देश का सुंदर राज्य बनेगा, यहां का छात्र देश में मजबूती से अपनी पहचान, उनके अंदर जो क्षमता है,

उसका प्रदर्शन करेगा। साथ ही कला, संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा राज्य में खेल एवं खिलाड़ियों के हित में कई कल्याणकारी योजनायें संचालित किया जा रहा है, जिसमें खिलाड़ी कल्याण कोष, राज्य में खेल संघों को आर्थिक सहायता, मुख्यमंत्री खेल विकास योजना के तहत राज्य के प्रत्येक प्रखंड में आउट डोर स्टेडियम निर्माण की योजना, राज्य के विद्यालयों में खिलाड़ियों के लिये एकलव्य राज्य आवासीय खेल प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना के साथ-साथ राज्य में जिला एवं प्रखंड स्तर पर निर्मित स्टेडियमों के रख-रखाव के साथ ही काउंट टू प्ले योजना के तहत इसको ऐक्शन में लाया जा रहा है। राज्य के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षण सुविधा प्रदान किये जाने के उद्‌देश्य से राजगीर में 90 एकड़ भूमि में स्पोर्ट्स अकादमी के साथ क्रिकेट स्टेडियम का भी शुभारंभ किया गया है, जो लगता है कि बिहार के इतिहास में एक नया रूप है । महोदया, कल जो बिहार बदनाम था, कल बिहार जो लगता था कि यह गुण्डों का बिहार है, कल लगता था कि यह बिहार घोटालेबाजों का है, लेकिन खासकर क्रिकेट क्षेत्र में नये युवाओं, नये छात्रों को नया रूप देने में खेल की बड़ी भूमिका है । यदि स्टेडियम और स्पोर्ट्स अकादमी का प्रदर्शन होगा तो आनेवाले समय में खेल के साथ-साथ शिक्षा का भी मजबूती से प्रदर्शन होगा । महोदया, हमको लगता है कि जिस रूप में खेल एवं संस्कृति विभाग को लोग नहीं जानते थे, लेकिन आज आदरणीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में लगता है कि खेल संस्कृति को जगाकर हम अपने इतिहास को भी जिन्दा रख सकते हैं । आनेवाले समय में हम एक नया रूप दे सकते हैं । महोदया, यह बड़ी बात है कि बिहार दिवस के दूसरे दिन आज लोहिया जी का जन्म दिवस भी है, आज शहीदे आजम भगत सिंह का शहादत दिवस है । लेकिन हमारे विपक्ष के नेता काली पट्‌टी बांध कर आये हैं, यह बड़ा ही दुर्भाग्य की बात है । निश्चित रूप से सारे लोग बिहार की बात करते, बिहार के विकास की बात करते, बिहार को नई दिशा देने की बात करते, लेकिन जहां लोहिया जी सामाजिक न्याय के पुरोद्धा थे, हमको लगता है कि पिछड़ों के आंदोलन के प्रतीक थे लोहिया जी । आज लोहिया जी का जन्म दिवस है । क्या सोच कर आज ये काली पट्‌टी बांध कर आये हैं ? हमको लगता है कि द्वेष है, इनको क्या लगता है कि शहिदे-आजम भगत सिंह का जो आज शहादत दिवस है, निश्चित रूप से सबों को खुशी मनानी चाहिए, हमारी नई पीढ़ी को निश्चित रूप से भगत सिंह से सीख लेनी चाहिए कि वे अपने देश की एकता और अंखडता के लिये, देश के साम्प्रदायिक सौहार्द के लिये, देश में अमन-चैन के लिये देश के अंदर हमारा बिहार ही सुन्दर राज्य बने, देश और दुनिया में नाम करे लेकिन आज विपक्ष के माननीय सदस्य काली पट्‌टी लगाये हुये हैं । काली पट्‌टी किस आधार पर किस दृष्टि से लगाया जाता है ? हमको लगता है कि बिहार का पुनः वही ले जाना चाहते हैं। पिछले दिनों

जिस रूप में माननीय नीतीश कुमार जी के नेतृत्व में बिहार को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई थी उसको ये देश और दुनिया में धुंधलाना चाहते हैं । हम माननीय नेता, विरोधी दल से चाहते हैं कि आप भी बिहार के विकास में शामिल होईये, नहीं तो जनता आपको माफ नहीं करेगी । क्योंकि जिस रूप में आप प्रदर्शन कर रहे हैं, हमको लगता है कि जनता आपको माफ नहीं करेगी । क्योंकि जनता ने आपका राज देख लिया है, आपका वही राज था, जहां लाठियां चलती थी, जहां अतिपिछड़ों पर जुल्म होता था, जहां महादलितों पर जुल्म होता था । लेकिन अब वह नहीं होगा । अब सुन्दर बिहार होगा और खासकर युवा छात्र बिहार में अपनी पहचान बनायेंगे ।

सभापति (डॉ0 रंजू गीता) : शांति शांति ।

श्री लक्ष्मेश्वर राय : साथ ही राज्य के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षण सुविधा प्रदान किये जाने के उद्देश्य से अनेक योजनायें सरकार ने लायी है । खासकर मोईनुल हक स्टेडियम को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पुनर्निर्माण करने के लिये सरकार ने योजना बनायी है । खासकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगता में पदक प्राप्त राज्य खिलाड़ियों को राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर सम्मानित किया गया । राज्य खेल संघों के माध्यम से चलाये जाने हेतु आज खेल संघों को सहायता प्रदान की जा रही है । मुख्यमंत्री खेल विकास योजना के तहत एकलव्य राज्य आवासीय खेल प्रशिक्षण केन्द्र राज्य के 16 जिलों में 22 केन्द्र संचालित हैं । 12 नये केन्द्र आरंभ होने की प्रक्रिया में है । राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में वर्ष 2017-18 के अन्तर्गत कुल 5 स्वर्ण, 4 रजक और 15 कास्य पदक कुल 24 पदक प्राप्त कर बिहार का नाम रौशन किया और नई दिशा और नई दृष्टि दिया है । खासकर सुश्री अनन्या आनंद ने भारतीय स्कूल दल का प्रतिनिधित्व करते हुये कला एवं खेल प्रतियोगिता में रजत पदक प्राप्त कर देश और बिहार का नाम रौशन किया है ।

क्रमश :

टर्न-13/सत्येन्द्र/23-3-18

श्री लक्ष्मेश्वर राय(क्रमश:) मुख्यमंत्री खेल विकास योजना के अन्तर्गत राज्य में खेल का वातावरण तैयार करने हेतु प्रखंड स्तर पर स्टेडियम का निर्माण कराया जा रहा है और 113 स्टेडियम का निर्माण पूर्ण हो चुका है । वर्ष 2017-18 में 36 नये स्टेडियम की स्वीकृति प्रदान की गयी है । राज्य के विभिन्न जिलों में खेल का वातावरण एवं जागरूकता के लिए इंडोर मल्टी जिम उपकरण एवं सार्वजनिक पार्कों में जिम की स्थापना करने का लक्ष्य है । खासकर संस्कृति के क्षेत्र में 350 वें प्रकाश उत्सव के अवसर पर महत्वपूर्ण गतिविधियां की गयी विभाग के द्वारा जिससे हमारे राज्य की प्रतिष्ठा बढ़ी है और खासकर बिहार का जो गौरव था उसका प्रदर्शन भी हुआ । महोदय, यह वर्ष बिहार

कला वर्ष के रूप में घोषित किया गया है । नालंदा के पुरातात्विक स्थल को विश्व स्मारक के रूप में स्वीकृति मिली है, इससे पहले भी जो हमारे गया का महाबोधि मंदिर है, वह विश्व स्मारक था लेकिन अब यह दूसरी स्वीकृति मिली है जिससे बिहार की प्रतिष्ठा खासकर देश दुनिया में बढ़ा है । कला के क्षेत्र में कलाकारों को सम्मानित करने के उद्देश्य से बिहार कला पुरस्कार योजना के तहत 18 अक्टूबर, 2016 को बिहार कला उत्सव के अवसर पर सम्मानित किया गया । महोदय, राज्य के प्रत्येक प्रमंडलीय जिला मुख्यालय में आर्ट गैलरी के निर्माण करने की योजना है । मुधबनी पेंटिंग जो विश्वस्तरीय अपना पहचान बना लिया है, उनके संरक्षण, सम्बर्द्धन एवं विकास हेतु मिथिला चित्रकला संस्थान को मधुनबी में स्थापित करने की स्वीकृति मिली है । मिथिला पेंटिंग खासकर पेंटिंग ही नहीं, हमें लगता है कि यह देश और दुनिया में एक नया पहचान बनाया है और उसके लिए हमारी सरकार ने मिथिला पेंटिंग महाविद्यालय खोलकर हमको लगता है कि मधुबनी ही नहीं पूरे बिहार का पहचान देश और दुनिया में बढ़ाया है, इसके लिए हम धन्यवाद भी देते हैं । आने वाले समय में ये पेंटिंग रोजगार का बड़ा अवसर देगा और यह वातावरण के साथ साथ लोगों को रोजगार भी बढ़ायेगा । राज्य के फिल्म निर्माण प्रोत्साहन हेतु फिल्म सिटी का निर्माण राजगीर में कराया जा रहा है । इस वर्ष केन्द्रीय सुरक्षित स्मारक स्थल, नालंदा महाबिहार के भग्नावशेष पर फिल्म का निर्माण संयुक्त राष्ट्र संघ के सिक्स औफिसियल लैंग्वेज में किया गया है जो एक बड़ी बात है । वैशाली में बुद्धदर्शन संग्रहालय हेतु स्मृति स्तूप के निर्माण के लिए सरकार ने 72 एकड़ भूमि का अधिग्रहण किया है । लोकनायक जयप्रकाश जी के गांव सिताव दियारा में स्मृति भवन एवं पुस्तकालय भवन का निर्माण कराया गया है और अपने पुरखों की जो हमारा स्मृति था जय प्रकाश नारायण जी का यह उनके याद में की गयी है जो प्रशंसनीय है । विचार के बिना कोई देश, कोई राज्य, कोई समाज का उन्नत नहीं हो सकता और यह बिना सिद्धांत के, बिना व्यवहार के नहीं हो सकता है जिसमें बड़ी भूमिका अदा किया है हमारा कला ,संस्कृति विभाग । राज्य के संस्कृति वातावरण हेतु शनि विहार, संगीत बिहार आदि कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है इसीलिए हम चाहेंगे खासकर खेल संस्कृति विभाग जो है, हमें लगता है कि यह रोजगार का भी अवसर बढ़ायेगा । हम अपील करना चाहते हैं बिहार के लोगों से भी और हमलोग खासकर हमारे जो नीतीश कुमार जी है उनकी जो मंशा है, आज चाहे प्रकाश उत्सव हो, चाहे ये चम्पारण शताब्दी समारोह हो, हमको लगता है कि आज बिहार को देश और दुनिया में प्रतिष्ठा बढ़ा है इसलिए हम सबों से अपील करते हैं कि आने वाले समय में बिहार को सुन्दर बनाईए, बिहार की जो अस्मिता खत्म हो गयी था पौराणिक इतिहास में, बीच में जो बड़ा बड़ा घोटाला हुआ था उस बदनामी से निकालने के लिए बिहार आज पूरे चकचक, अपनी सौन्दर्यता के लिए, अपनी प्रतिभा के लिए पूरा देश में जाना जा रहा

है । हम चाहेंगे सबों से कि आने वाले समय में नीतीश कुमार जी के नेतृत्व में बिहार देश का अब्बल राज्य होगा, बिहार देश का सुन्दर राज्य होगा । हम चाहेंगे कि सारे लोग मिलकर के बिहार की पहचान के लिए मजबूती से अपने विचार से, अपने दृष्टिकोण से अपने पौराणिक इतिहास, पौराणिक संस्कृति की मजबूती के लिए सहयोग करें और नीतीश कुमार जो देश की संस्कृति ही नहीं, हमें लगता है कि बिहार के गौरव के साथ देश का वे पहला व्यक्ति हैं जो खासकर के कमजोर समाज से लेकर और संस्कृति, कला सभी क्षेत्र में विकास करने का अवसर दिया है । हमें याद है कि पिछले दिनों, आचार व्यवहार पर हम कहना चाहते हैं, हमारे पूर्व पथ निर्माण मंत्री जी, हमें याद आ रहा है, हम मजबूरी में कुछ कह रहे हैं कि एक हमारे मित्र बोले कि आपने कटौती प्रस्ताव क्यों लाया लेकिन आप भी जान लीजिये इलियास साहब, आदरणीय इलियास साहब को हम कहना चाहते हैं कि आप बहुत गौरवशाली है लेकिन कल जो घटना हुई मुझे जैसे व्यक्ति को बड़ा ही दर्द हो रहा है इसलिए मैं कह रहा हूँ सदन में कि कल जिस रूप में प्रधानमंत्री जी को आपके लोगों ने या माननीय सदस्य ने जो शब्द का उच्चारण किये, वह शोभा नहीं देता है इसलिए आपको भी उठकर बोलना चाहिए था कि आचार विचार भी जीवन और राजनीति का महत्वपूर्ण चीज है लेकिन आपने नहीं कहा, विरोध होता है लेकिन प्रधानमंत्री का कोई पद होता है, प्रधानमंत्री देश का पद होता है प्रधानमंत्री एक पद नहीं, देश का प्रधानमंत्री होता लेकिन कल जिस रूप में हुआ, हमको लगता है आज हम व्यक्तिगत रूप से इलियास साहब से कहेंगे कि कल या परसों जो हुआ, दुख है कि आप प्रधानमंत्री जी को इस रूप में कहना क्या चाहते हैं? कौन मारता है अति पिछड़ा को, कौन मारता है महादलित को, आपको स्मरण होगा कि कोई अति पिछड़ा को नहीं मारता, वही लोग मारता है जिसे पिछले दिनों के जंगल राज के नाम से जाना जाता, कौन घोटाला करता, दबंगई वही कर रहा है, कौन हल्ला हंगामा करता है जिसके पास दबंगता है इस पर विचार करना चाहिए । इन्हीं चंद बातों के साथ हम चाहेंगे सरकार से कि जो हमारे यहां लौकही प्रखंड में खीर पूरी का एक मेला लगता है, खिरिया जो नेपाल के बोर्डर पर है, जहां पांच लाख लोग जूटते हैं इसलिए हम चाहेंगे कि झऊरी जो लौकही प्रखंड में है, उसको राजकीय मेला के रूप में घोषित किया जाय। इन्हीं चंद बातों के साथ अपनी बात को समाप्त करते है और आपने हमको जो अवसर प्रदान किया है इसके लिए भी हम आपको धन्यवाद देते है ।

श्री श्याम बाबू प्रसाद यादवः सभापति महोदया, मैं वित्तीय वर्ष 2018-19 के लिए पेश कला संस्कृति एवं युवा विभाग के कटौती प्रस्ताव के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हूँ । महोदया, मैं बधाई देना चाहूंगा इस सरकार के अगुआ आदरणीय नीतीश कुमार जी, माननीय उप मुख्यमंत्री सुशील कुमारी मोदी जी और हमारे माननीय मंत्री, कला संस्कृति एवं युवा विभाग के माननीय ऋषिदेव जी को कि उन्होंने आज कला संस्कृति को आगे

ले जाने के लिए काफी प्रयास, परिश्रम कर के अब्बल बनाने का काम कर रहे हैं । महोदया, राज्य सरकार कला, संस्कृति एवं युवा के क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रही है । आज इसी बेहतर कार्य का प्रमाण है कि वर्ष 2016 में बिहार म्युजियम की पुस्तिका ' आई एम बिहार' को विश्व प्रतिष्ठित क्युरियस इन बुक आवार्ड प्रदान किया गया । साथ ही साथ बिहार म्युजियम को लोपाज डिजाईन के लिए विश्व प्रसिद्ध 'आई एफ' डिजाईन आवार्ड प्रदान किया गया । महोदया, सरकार द्वारा 02 अक्टूबर, 2017 को पटना स्थित बिहार म्युजियम की सभी दीर्घाओं का लोकार्पण किया गया ताकि देश-विदेश के पर्यटक एवं आमजन भारतीय उप महाद्वीप के ऐतिहासक एवं सांस्कृतिक विकास में बिहार के योगदान से अवगत हो सकेंगे । महोदया, सरकार द्वारा सांस्कृतिक संरचना निर्माण योजना के तहत दरभंगा, सहरसा, मुंगेर एवं प्रमंडलीय मुख्यालय मे प्रेक्षागृह सह आर्ट गैलरी तथा बेगुसराय जिला मुख्यालय में आधुनिक प्रेक्षागृह एवं चाक्षुष कला की प्रदर्शनी हेतु आर्ट गैलरी के निर्माण कराने का निर्णय लिया गया । महोदया, इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा मिथिला लोक चित्रकला के संरक्षण/सम्बर्द्धन एवं विकास हेतु मधुबनी जिला के रहिका प्रखंड में मिथिला चित्रकला संस्थान का निर्माण, तेल्हाड़ पुरातात्विक स्थल पर ऑनसाईट म्युजियम का निर्माण करवाया जा रहा है । महोदया, चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष के अवसर पर बेतिया, मोतिहारी, मुजफ्फरपुर में 2 हजार व्यक्तियों की क्षमता वाले गांधी स्मृति नगर भवन के निर्माण की कार्रवाई की जा रही है । (क्रमशः)

टर्न-14/मधुप/23.03.2018

....क्रमशः ...

श्री श्याम बाबु प्रसाद यादव : महोदया, सरकार युवाओं के खेलकूद पर भी विशेष ध्यान दे रही है जिसके तहत मुख्यमंत्री खेल विकास योजनान्तर्गत राज्य के विभिन्न जिलों में प्रखण्ड स्तर पर 113 स्टेडियमों को बनाया जा चुका है तथा शेष 51 नये स्टेडियमों के निर्माण की प्रक्रिया जारी है ।

महोदया, इसके अतिरिक्त राजगीर में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के स्पोर्ट्स एकेडमी एवं क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण कराया जा रहा है, साथ ही साथ मोईनुल हक स्टेडियम, पटना को विश्वस्तरीय क्रिकेट स्टेडियम के रूप में विकसित करने हेतु सरकार एवं बी0सी0ए0 के बीच एम0ओ0यू0 किये जाने की कार्रवाई की जा रही है ।

महोदया, खेलों को प्रोत्साहन देने हेतु सरकार द्वारा राज्य खेल नीति, 2018 के निर्माण हेतु टास्क फोर्स का गठन किया गया है ।

महोदया, सरकार राज्य में फिल्मों के विकास हेतु भी तत्पर है जिसके तहत राजगीर में फिल्म सिटी का निर्माण करने तथा बिहार राज्य में फिल्म प्रोत्साहन नीति, 2018 पर कार्रवाई की जा रही है ।

महोदया, सरकार द्वारा पंचायती राज संस्थानों को मजबूत करने तथा ग्राम पंचायतों को मजबूत करने हेतु राशि उपलब्ध करायी जा रही है ।

इसके अतिरिक्त पंचायत सरकार भवन के निर्माण हेतु भी राशि उपलब्ध करा रही है । वर्ष 2018-19 में राज्य के पटना, नालन्दा, भोजपुर, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, गया, रोहतास, औरंगाबाद, समस्तीपुर, दरभंगा एवं मधुबनी में 330 पंचायत सरकार भवनों के निर्माण कराने की सरकार की योजना है ।

महोदया, सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल, ग्रामीण गली-नाली पक्कीकरण कार्य हेतु त्रिस्तरीय पंचायती राज संस्थाओं को राशि उपलब्ध करा दी गई है ताकि गॉवों में पेयजल की सुविधा एवं गली-नाली पक्कीकरण का कार्य हो सके ।

महोदया, राज्य सरकार द्वारा अवैध उत्खनन की रोकथाम हेतु सभी जिलों में टास्क फोर्स का गठन एवं मुख्यालय में नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है । अभी तक अवैध उत्खनन पर की गई कार्रवाई के तहत दिसम्बर, 2017 तक 8912 छापेमारी, 1623 प्राथमिकी दर्ज एवं 1161 अवैध उत्खनन कर्त्ताओं की गिरफ्तारी की गई है तथा दण्ड के रूप में कुल 7.86 करोड़ रूपये की वसूली की गई है ।

महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री कला, संस्कृति एवं युवा विभाग का ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा कि हम पूर्वी चम्पारण के पिपरा विधान सभा क्षेत्र से आते हैं, पिपरा विधान सभा क्षेत्र में पिपरा स्टेशन से सटे सीताकुण्ड है । पिपरा स्टेशन व एन0एच0-28 के 2 कि0मी0 उत्तर तथा जिला मुख्यालय से लगभग 22 कि0मी0 पूर्व ऐतिहासिक सीताकुण्ड धाम स्थित है ।

महोदया, उक्त धाम लगभग 14 फीट ऊंचे टिलानुमा आकार में बीस एकड़ में फैला हुआ है । यहॉ प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुपम छटा है । इसके चारो तरफ सैकड़ो औषधीय पेड़-पौधे उगे हैं । इनके बीच लगभग 2 एकड़ में कुण्ड है यहॉ पर मॉ जानकी का मंदिर है । जनश्रुति के अनुसार त्रेतायुग में भगवान राम की बारात जब जनकपुर से अयोध्या के लिए लौट रही थी तो उक्त स्थल पर ही बारात रूकी थी । उस समय भगवान श्रीराम और सीता की चौठारी की रश्म की गयी थी । मॉ जानकी व श्रीराम का कंगन खोलने का रश्म भी यहीं पूरा हुआ था ।

महोदया, कंगन के पत्ते के समान आम का पेड़ था, वह पेड़ 1934 ई0 के भूकम्प में दब गया । मॉ जानकी जहॉ स्नान की थीं वह पोखर गंगा सागर पोखर के नाम से जाना जाता है यहॉ प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में लोग स्नान करने आते हैं । उक्त पोखर के समीप पॉच और बड़ा पोखर है । यहॉ मॉ जानकी ने भगवान राम के साथ भगवान शंकर के एक अद्‌भुत लिंग की स्थापना कर पूजा-अर्चना की थी । लिंग मंदिर गिरिजानाथ के नाम से प्रसिद्ध है । जब भी सुखाड़ की संभावना होती है इर्द-गिर्द के किसान गिरिजानाथ के लिंग को जल में डुबो देते हैं, तब निश्‍चित ही वर्षा होती है ।

साथ ही, यहाँ अन्य दर्जनों मंदिर तथा अभिलेखयुक्त पत्थर हैं । इसको देखने पर लगता है कि यह प्राचीन मंदिर के दीवार पर लगे किवाड़ का अवशेष है, यहाँ चैत्र रामनवमी के अवसर पर प्रत्येक वर्ष मेला लगता है, लोग बताते हैं कि अगर टिलानुमा उक्त स्थल की खुदाई करायी जाय तो वृहद संख्या में पुरातात्विक अवशेष मिलेगा । श्री रामनवमी के दिन भव्य मेला का आयोजन होता है जहाँ 30 से 40 हजार श्रद्धालुओं का जमावड़ा लगता है यहाँ रामनवमी के दिन सीताकुण्ड महोत्सव मनाया जाता है । महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि यह महोत्सव सरकार के स्तर पर मनाया जाय ।

सभापति (डॉ0 रंजु गीता) : अब आप समाप्त करेंगे ।

श्री श्याम बाबु प्रसाद यादव : एक मिनट । महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री से आग्रह करूंगा कि नगर निगम एवं नगर परिषद्, नगर पंचायत के साथ-साथ आज ग्रामीण इलाके में भी स्टेडियम की जरूरत है ताकि ग्रामीण इलाके के युवा खेल के प्रति जागरूक हो सकें । चकिया प्रखण्ड के सागर में प्रतिवर्ष राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन होता है और वहाँ जमीन भी प्राप्त है । बावन बिगहा बुद्ध तालाब खेल मैदान है वहाँ स्टेडियम का निर्माण कराया जाय ।

महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि हमारे विधान सभा पिपरा अन्तर्गत दो स्टेडियम का निर्माण उस समय शुरू किया गया था जब माननीय मंत्री जनार्दन सिंह सीग्रीवाल जी कला संस्कृति मंत्री थे लेकिन विभागीय उदासीनता के कारण आज तक दोनों स्टेडियम का निर्माण चकिया एवं मेहसी में पूर्ण नहीं हो सका है । हम आग्रह करते हैं कि जो एजेन्सी कार्य कर रही है उसपर कार्रवाई करते हुये स्टेडियम के निर्माण का कार्य शीघ्र पूरा कराया जाय ।

महोदया, आपने मुझे बोलने के लिये समय दिया इसलिये आपके प्रति आभार प्रकट करते हुये पूरे पिपरा विधान सभा क्षेत्र की तमाम जनता का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे यहाँ पहुँचा कर बोलने का मौका दिया । इन्हीं बातों के साथ जय हिन्द ।

श्री मो0 इलियास हुसैन : सभापति महोदय, माननीय सदस्य के भाषण के क्रम में एक अच्छा सुझाव आया और सरकार की भी यह सोच है, उसपर आपके माध्यम से सारे सदन का ध्यान आकृष्ट कराना चाहूँगा । माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी के शासन में पंचायत सरकार भवन का जो कंसेप्ट है, कहीं बने हुये भी हैं और बनाने की बात है, यहाँ माननीय मंत्री जी भी बैठे हैं, सभापति महोदय, आपके माध्यम से इनसे आग्रह करेंगे, तमाम विधायक यहाँ हैं, जहाँ-जहाँ पंचायत सरकार भवन बना है, आज तक न उसमें कर्मचारी गया, न सी0ओ0 जाता है, न बी0डी0ओ0 जाता है, यों ही खाली पड़ा हुआ है, उसके चौखट-दरवाजे उखाड़े जा रहे हैं । सरकार से आग्रह करते हैं कि उसको चालू करवाया जाय ।

सभापति (डॉ0 रंजु गीता) : माननीय सदस्या श्रीमती अमिता भूषण । आपका समय 10 मिनट ।

श्रीमती अमिता भूषण : माननीय सभापति महोदया, मैं कटौती प्रस्ताव के समर्थन में बोलने के लिये खड़ी हूँ । पंचायती राज विभाग की परिकल्पना एवं इस विभाग की चर्चा वास्तव में राष्ट्रपिता बापू की ग्राम स्वराज की अवधारणा को सनमन समर्पित है । महोदया, यदि बापू के स्वशासन के तरीकों या उनकी अवधारणाओं की चर्चा करूं तो प्रारंभिक सामाजिक संस्थाएँ जो देश के अन्दर फैले लगभग 5.5 लाख से भी ज्यादा ग्राम पंचायतें हैं । इनका उद्देश्य सशक्त, पारदर्शी, समावेशी एवं उत्तरदायी स्वशासन की व्यवस्था बनाने की है । बाद में पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गॉधी जी ने इस व्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिये अथक प्रयास किया एवं स्वर्गीय नरसिम्हाराव जी के प्रधानमंत्रित्व काल में 73वें संविधान संशोधन विधेयक से एक संवैधानिक इकाई के प्रतिरूप में प्रतिस्थापित किया । महोदया, हम सभी जानते हैं कि हमारी पंचायतें अपने लिये आर्थिक संसाधन जुटाने में असमर्थ है । इन संस्थाओं के पास राजस्व का कोई भी स्त्रोत नहीं है। केन्द्र व राज्य सरकार के अनुदानों से ही पंचायतों के कार्य संचालित होते हैं । इन संस्थानों की भूमिका एक क्रियान्वयन इकाई के रूप में रह गई है । भारत सरकार एवं बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं की सफलता की जिम्मेवारी पंचायती राज संस्थाओं के कंधों पर ही है । अत: आवश्यक है कि इन संस्थाओं को पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत बनाया जाय । ...क्रमश: ....

टर्न-15/आजाद/23.03.2018

..... क्रमश: .....

श्रीमती अमिता भूषण : महोदया, इन चुनौतियों को समझते हुए केन्द्र की पिछली यू0पी0ए0 सरकार ने ''राजीव गॉधी पंचायती सशक्तिकरण'' योजना की शुरूआत की थी और वर्ष 2013-14 में इसे बिहार में लागू किया गया था । महोदया, इस योजना के अन्तर्गत पंचायती राज संस्थानों को मानव संसाधन, सूचना प्राद्योगिकी, सुविधा सुदृढ़ीकरण, क्षमता वहन एवं आधारभूत संरचनाओं के विकास आदि का प्रावधान किया गया था । इसके लिए वर्ष 2013-17 में कुल लगभग 1629.30 करोड़ रू0 की राशि प्रस्तावित की गयी थी । वर्ष 2018-19 में जो ग्राम पंचायतों के भवन निर्माण मद में राशि उपलब्ध कराने की बात कही गयी है, वह पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में कम है । जहां पिछले वर्ष इस मद में 300 करोड़ रू0 खर्च की बात कही गयी थी, वहीं आगामी वर्ष में 200 करोड़ रू0 खर्च करने का प्रावधान किया गया है ।

महोदया, राजीव गॉधी पंचायत सशक्तिकरण योजना के अन्तर्गत आधारभूत संरचना विकास के लिए प्रावधान किया गया है । इस मद में केन्द्र सरकार ने राज्य को

अपना केन्द्रांश भी दे दिया है । इस योजना के अन्तर्गत विभाग के राज्य पंचायत संसाधन केन्द्र, प्रत्येक जिला में जिला पंचायत संसाधन केन्द्र, प्रखंड संसाधन केन्द्र स्थापित करने की बात कही गयी है परन्तु अभी तक इन केन्द्रों के निर्माण की दिशा में कोई ठोस पहल होता हुआ नहीं दिखयी पड़ रहा है । महोदया, अगर मैं अपनी क्षेत्र की ही बात करती हूँ तो हमारे क्षेत्र में लगभग 28 पंचायत हैं, अगर देखा जाय कि एक प्रखंड ऐसा हैं, जहां कहीं भी पंचायत भवन नहीं है, जहां एक भी पंचायत भवन नहीं है और कुल मिलाकर के लगता है कि 4-5 मात्र पंचायत भवन वहां पर हैं तो मुझे इन सब समस्याओं की ओर भी ध्यान देने की जरूरत है ।

महोदया, 14वें वित्त आयोग ने बुनियादी अनुदान अन्तर्गत 2015-16 से लेकर 2019-20 तक के लिए लगभग 18916.05 करोड़ रू0 इस राज्य के लिए अनुशंसा की थी जिसमें इस वित्तीय वर्ष में 4199.71 करोड़ रू0 प्राप्त होने की बात कही गयी है ।

जैसा कि हम सभी जानते हैं इस राज्य में 8397 ग्राम पंचायत संस्थायें हैं एवं बड़ी आबादी गांवों में रहती है । माननीय मुख्यमंत्री जी ने ही स्मार्ट विलेज की बात कही है, मगर दुःख है कि राज्य में देखने दिखाने को एक भी स्मार्ट विलेज अभी तक नहीं बन पाया है । महोदया, ऐसे महत्वपूर्ण योजना की सफलता के लिए पर्याप्त राशि के साथ-साथ एक बेहतर कार्य योजना की भी जरूरत है । गांव के अन्दर कचड़े के निष्पादन एवं प्रबंधन की कोई व्यवस्था नहीं बन पायी है, ना ही किसी गांव में ऐसी कोई संस्था या कमिटी गठित हुई है जो नियमित रूप से स्वच्छता कार्यक्रम को चलाती हो । प्रखंड, पंचायत के अन्तर्गत ऐसी कमिटी बनी हुई भी है तो वह केवल कागजों पर ही बनी हुई है । वास्तव में संचालन की व्यवस्था के अभाव में स्मार्ट विलेज कोरी कल्पना बन कर रह गयी है ।

महोदया, पंचायती राज अधिनियमों में ग्राम कचहरी जैसे संस्थाओं को पुनर्स्थापित किया गया है । सरकार ने ग्राम कचहरी के निर्वाचित सदस्यों को न्याय की पगड़ी तो पहना दी परन्तु गांवों के अन्दर विवादों को निपटाने के लिए संसाधन की व्यवस्था नहीं करवा पायी । ग्राम कचहरी से जुड़े सदस्यों को विशेष सुरक्षा की भी आवश्यकता है, क्योंकि विवादों के निपटारे के दौरान कभी कभी कोई अप्रिय घटना घट जाती है तो सरकार को इन सदस्यों के साथ जुड़े हुए समस्याओं की ओर भी ध्यान देने की जरूरत है ।

महोदया, अंत में आपके माध्यम से मैं माननीय मंत्री, खनन एवं भूतत्व विभाग का ध्यान अपने क्षेत्र की समस्याओं की ओर आकर्षित कराना चाहती हूँ । पिछले महीने राज्य सरकार द्वारा बालू का कृत्रिम संकट पैदा किया गया । विरोधाभासों से भरी हुई खनन नीति ने राज्य के आधारभूत संरचनाओं के निर्माण की गति को बाधित किया । महोदया, मैं जिस विधान सभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हूँ, वहां बालू के अभाव की

अभी तक मुश्किलें आ रही है । महोदया, संरचना निर्माण के लिए बालू की जरूरत होती है और खासकर लाल बालू की । इसके लिए मेरे जिले की निर्भरता लखीसराय जिले पर है और विगत कुछ दिनों से वहां बालू का खनन बन्द था, जिसके कारण कालाबाजारी बहुत बढ़ गई है । वहां अभी भी 100 सी0एफ0टी0 की कीमत 7000/-रू0 है, वो भी लम्बी प्रतीक्षा सूची के बाद उपलब्ध हो पाती है । इसके लिए ना सिर्फ सदन बल्कि सड़कों पर भी लोग आन्दोलित थे ।

मैं आग्रह करना चाहती हूँ माननीय मंत्री जी से कि बेगुसराय में बालू की उपलब्धता के लिए सकारात्मक पहल करें ताकि आधारभूत संरचना के निर्माण की, जिसकी कल्पना महात्मा गॉंधी जी ने की थी, हम सब मिलकर उनके सपनों को साकार करें, इन्हीं शब्दों के साथ सदन के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ । धन्यवाद ।

सभापति(डॉ0 रंजू गीता) : आपको भी बहुत,बहुत धन्यवाद, अपने समय सीमा में वक्तव्य समाप्त करने के लिए । माननीय सदस्य श्री मो0 नवाज आलम ।

श्री मो0 नवाज आलम : सभापति महोदया, मैं कटौती प्रस्ताव के पक्ष में और बजट के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ, अनुदान मांग के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ । महोदया, सरकार की जो नीति है, कला,संस्कृति एवं युवा विभाग, उसमें मुझे लगता है कि सरकार की न कोई नीति है, न कोई सोच है और मुझे लगता है कि आज के समय में युवाओं को प्रोत्साहन देना चाहिए । तमाम मामले में कहीं न कहीं जो मैं उनकी किताबों का अध्ययन कर रहा था, उससे लगता है कि इनकी सोच कहीं धरातल पर लाने की नहीं है । महोदया, इसलिए कि संस्कृति निदेशालय के अधीन लगभग दो एकेडमिक आती है, एक ललित कला अकादमी और संगीत नाट्य अकादमी, दोनों लगभग जो है एक साल से यूं कहें कि वेंटीलेटर पर चल रही है । उस विभाग के न तो प्रधान सचिव और न ही कोई सरकार की योजना है, जिसके तहत उन दोनों एकेडमिक को सही और सुचारू रूप से चलाने के लिए अगर सरकार की सही सोच होती, सरकार की सही नीति होती तो निश्चित रूप से उसमें प्रिंसीपल सेक्रेटरी होते । हम देखते हैं कि यह विभाग लगातार प्रभार में चल रहे हैं और जिसका कारण है महोदया कि कोई भी विभाग जब-जब प्रभार में चलता है, वेंटीलेटर पर चलता है तो उस विभाग के तमाम प्रिंसीपल सेक्रेटरी, तमाम विभागों को देख-रेख करते, उनके सामने इन विभागों को देखने का, समझने का कोई चिन्ता नहीं है । यहां तक कि महीनों-महीने, दो-दो महीना फाईलें इसी तरह से लटकती रहती है महोदया, इसका जीता-जागता नमूना मैं बताना चाहता हूँ, जब इस विभाग से संबंधित 30.01.2017 को जब माननीय मुख्यमंत्री की समीक्षा बैठक हुई थी और उस मुख्यमंत्री की समीक्षा बैठक में इन तमाम जो विभाग हैं, उन तमाम बिन्दुओं को मैंने बिन्दुवार तरीके से बताने का काम किया था । महोदया, जब देश का, इस मुल्क का और इस बिहार सूबे का मुखिया जिस जगह समीक्षा बैठक पूरे विभाग का

कर रहा हो और उस विभाग में कहीं न कहीं आज लगभग दो साल पूरे होने जा रहे हैं, आपके विभाग का जो आंकड़ा देखने से पता चलता है महोदया, तमाम चीजों में आप जीरो साबित हुए । आप कहते थे कि हम हर प्रखंड में स्टेडियम देने का काम करेंगे, हर जगह युवाओं को प्रोत्साहन देंग । लेकिन महोदया, हमने अपने ज्वलंत समस्याओं को, हम आरा विधान सभा से आते हैं और वहां की 12 पंचायतें सुदूर इलाके ग्रामीण से आते हैं। एक जमीरा पंचायत है, जहां 10 हजार की आबादी का यह गांव है । वहां आज तक प्रखंड में लगाातर 30.01.2017 को मुख्यमंत्री की समीक्षा बैठक में मैंने यह बात रखी और सदन में भी इस बात को रखने का काम किया । यही नहीं महोदया, जगदीशपुर की समीक्षा बैठक की जो सभायें थी, उनमें भी माननीय मुख्यमंत्री को इस बात से अवगत कराने का काम किया था, प्रभारी मंत्री महोदय मौजूद हैं, इसलिए मुझे लगता है कि सरकार की जो चिन्ता है, सरकार की जो सोच है, वह सिर्फ जुमलेबाजी की है और जुमलेबाजी में विश्वास रखते हैं । महोदया, मैं आपको बताना चाहता हूँ, इसलिए मैं कटौती प्रस्ताव लाया हूँ, इसके पक्ष में सरकार को इस प्रस्ताव को मानना चाहिए ।

...... क्रमशः ....

टर्न-16/अंजनी/दि0 23.03.18

श्री मो0 नवाज आलम :...क्रमशः... इसलिए कि आपने इस मद में जो बजट प्रस्तुत किया है, उसमें 57.95 करोड़ रूपये के आवंटन को घटाकर आपने कहीं-न-कहीं 44.40 करोड़ रूपया करने का काम किया है । महोदया, यह दर्शाता है कि आपका युवाओं को प्रति कितना रूझान है ? महोदया, आपका जो युवाओं के प्रति प्रोत्साहन देने का मामला है, उसमें आपने स्कीम मद में बजट को कम करने का, अपनी मांग को कम करने का काम किया है । इससे महसूस होता है, इन झांकियों से ऐसा लगता है कि निश्चित रूप से जो आपकी सोच है, वह युवाओं को प्रोत्साहन नहीं देना चाहती है, सिर्फ जुमलाबाजी करना चाहती है और इस सरकार की किसी भी विभाग में जो काम करने की सोच है, जिसका जीता-जागता नमूना है पुरातत्व निदेशालय । पुरातत्व निदेशालय एक ऐतिहासिक धरोहर के रूप में जाना जाता है । लेकिन आज उसकी स्थिति यह है कि वहां पर एक भी कनीय पदाधिकारी नहीं हैं । कोई भी इन्सपेक्टर रेंक के भी पदाधिकारी जो उसकी देखरेख करने वाले लोग होते, वह भी वहां पर मौजूद नहीं हैं तो इससे पता चलता है कि सरकार की क्या कार्यशाली है ? निदेशक का पद स्थापित नहीं है । तमाम् जगहों की जो हालात हैं, वह बद से बदतर एवं जर्जर है और वहां पर फाईल का इसी तरह से अम्बार लगा हुआ है । महोदया, वर्ष 2014 में आपने नालन्दा जिला के तेल्हाड़ा में जो अवशेष खुदाई करने का काम किया गया था, वह आज तक खुदाई नहीं हुआ । सर्वेक्षण भी हो चुका और सर्वेक्षण होने के बाद भी खुदाई का रिपोर्ट इसी तरह से रखी हुई है ।

वर्ष 2014 से अनुज्ञप्ति नहीं मिल सका है महोदया । आपकी सोच, मुझे लगता है कि सिर्फ म्यूजियम बनाने में और सिर्फ अपनी पीठ थपथपाने से है । महोदया, इसलिए हम जानना चाहते हैं और कहना चाहते हैं कि 12 करोड़ रूपया गलत ढंग से कहीं-न-कहीं कर्मचारी/एजेंसी के माध्यम से, आपने उस निदेशालय के कर्मचारी के माध्यम से नयी दिल्ली एवं लखनऊ की एजेंसियों से जो लुटवाने का काम किया है, जिसमें कहीं-न-कहीं अनियमितता है, वह जांच का विषय है । हम सदन से मांग करते हैं कि निश्चित रूप से उसकी जांच होनी चाहिए । महोदय, राज्य में संग्रहालय निदेशालय के अधीन 23 संग्रहालय कार्यरत हैं लेकिन विभाग का ध्यान मात्र म्यूजियम पर ही केन्द्रित है । हम आपको बताना चाहते हैं कि आज जितने भी संग्रहालय हैं, वह मृतप्राय हैं, सिर्फ आपका ध्यान म्यूजियम में है, आप उस म्यूजियम में 1200-1400 करोड़ रूपया लगा दिये और आप कहते हैं कि बिहार एक गरीब सूबा है, आप डबल इंजिन की सरकार भी लाये, डबल इंजिन की सरकार लाने के बाद आदरणीय प्रधानमंत्री जी को भी उस जगह के चकाचौंध को दिखाने के लिए ले गये लेकिन जो वहां संग्रहालय है, क्या वे बन पाये हैं ? महोदया, तमाम जिले के सूबे में खेल का प्रोत्साहन नहीं हो पा रहा है । हमारे बच्चे कहीं दूसरी जगह जाकर प्रशिक्षण लेते हैं । हमलोगों के यहां एक सांस्कृतिक भवन है, माननीय मंत्री जी यहां बैठे हैं, सांस्कृतिक भवन जर्जर स्थिति में पड़ा हुआ है । आपकी क्या सोच है, हम जानना चाहते हैं, उस सांस्कृतिक भवन के तमाम् एकेडमिक के लोगों ने उस मामले को भी माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी के सामने रखने का काम किया था 30.1.2017 को और वह एक यादगार विषय है, लेकिन वह काम भी सर जमीन पर नहीं उतरा । महोदया, संग्रहालयों के तमाम चीजों में, उसके रख-रखाव, सफाई के नाम पर राशि का बंदरबांट होता है । महोदया, संग्रहालय निदेशालय के द्वारा आप पत्रिकायें छपवाते, प्रचार-प्रसार करते और प्रचार-प्रसार के माध्यम से तमाम किताबों की जो छपायी होती है, उस छपायी में निश्चित रूप से लूटने का काम कहीं-न-कहीं हो रहा है । जिस तरह से घोटाले की सरकार चल रही है तमाम विभागों में, अगर सही तरीके से इस विभाग की भी जांच की जाय तो घोटाला-ही-घोटाला मिलेगा । आपके सामने हम बताना चाहते हैं कि आपने रिपोर्ट में दिखाया है कि 131 स्टेडियम का निर्माण कर चुके हैं लेकिन अगर इसकी जांच करायी जाय तो आपके आधे से अधिक स्टेडियम अधूरे पड़े हैं । हम जानना चाहते हैं कि जिन चीजों का आप बखान करते हैं, जिन चीजों को आप बताना चाहते हैं, वह सब अधूरे पड़े हुए हैं । इससे पता चलता है कि आपकी मंशा ठीक नहीं है । महोदया, खेल प्रशिक्षण को प्रोत्साहन कौन देगा ? खेल प्रशिक्षक की बहाली ठीक ढंग से नहीं करते, इसलिए कहीं-न-कहीं इन कामों को अधूरा करने का काम आपने किया है । महोदया, सबसे बड़ी समस्या है, जिसको हम बताना चाहते हैं कि खेल के खिलाड़ियों के लिए

कोई दुर्घटना बीमा नहीं है, अगर आप दुर्घटना में खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देना चाहते हैं तो आपको निश्चित रूप से खिलाड़ियों के लिए दुर्घटना बीमा की राशि आवंटित करने की योजना होनी चाहिए थी । महोदया, प्रखंड में खेल क्लब है, उस खेल क्लब को सरकारी मान्यता प्रदान करने के लिए सहायता राशि उपलब्ध करानी चाहिए । महिला खेल को प्रोत्साहन देने की आपकी कोई योजना नहीं है । इसी तरह से हम आपसे कहना चाहते हैं कि तमाम् जिलों मे खेल संगठनों की सात सदस्यीय कमिटी बननी चाहिए ताकि वह खेलों के विकास के लिए सरकार को सुझाव दे सके । इस तरह से समिति के माध्यम से खेल को प्रोत्साहन मिलना चाहिए, लेकिन आपकी योजना निश्चित रूप से धरी-की-धरी रह गयी है । इसी तरह से हमारे यहां कोशी दुलारपुर एक जगह है, कोशी दुलारपुर की लगभग 20 हजार की आबादी है, लेकिन वहां स्टेडियम नहीं है, वहां स्टेडियम निर्माण हेतु प्रस्ताव हमलोगों ने माननीय मुख्यमंत्री जी, मंत्री एवं प्रधान सचिव को देने का काम किया था लेकिन वह भी काम लंबित है तो हम कैसे मानें कि आप विकास करना चाहते हैं । इसी तरह से सिवान में डॉ0 शहाबुद्दीन ने, पूर्व सांसद ने अपनी निधि से स्टेडियम बनाने का काम किया था, जिसका एक नमूना अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम के रूप में जाना जाता था, एक विकास पुरूष के रूप में शहाबुद्दीन जाने जाते थे सिवान जिले में, वैसे स्टेडियम को आप मरम्मती कराने का भी काम नहीं करते, इससे पता चलता है कि निश्चित रूप से आपकी कहीं-न-कहीं विकास के प्रति कोई रूचि नहीं है । इसी तरह से, हमारे यहां रमगढ़िया में रामनवमी का पर्व मनाया जाता है, रामनवमी के पर्व में, माननीय मंत्री जी भी मौजूद हैं, रामनवमी का पर्व बहुत ही धूमधाम से मानाया जाता है और सरकार की क्या सोच है, जिस तरह से जैन सर्किट को राष्ट्रीय पैमाने पर देने का काम किया गया है, उसी तरह से रामनवमी में रमगढ़िया को भी चिंहित करने का काम होना चाहिए । महोदया, हम यही कहना चाहेंगे कि पंचायती राज में पंचायत सदस्यों को कौन-सा सम्मान आपने दे दिया है ? मनरेगा में अधिकार नहीं दिया, वार्ड सदस्यों को आपस में लड़ाने का काम किया, मुखिया को आपस में लड़ाने का काम किया । मनरेगा की योजना जो सात निश्चय की योजना है, वह जमीन पर नहीं है, इसलिए हम कहना चाहते हैं कि तमाम वार्ड सदस्यों को, पंचायत समितियों को, मुखिया को मानदेय, पेंशन मिलना चाहिए । महोदया, हम यही कहना चाहेंगे कि बालू नीति जो है, हमारे माननीय मंत्री जी चाहते हैं लेकिन बालू नीति प्रधान सचिव लटकाकर रखे हुए हैं । प्रधान सचिव से विभाग चल रहा है महोदया । बालू नीति से तमाम कामगर, बेरोजगार, गरीब और व्यवसायी वर्ग, तमाम लोग वंचित हो रहे हैं और जो विधायक की निधि है, वह भी पूरी नहीं हो रही है । हम कैसे मानें कि आप विकास करना चाहते हैं ? महोदया, मैं एक शेर कहते हुए अपनी वाणी को विराम देंगे कि महोदया, झूठी शान के परिंदे ही ज्यादा, महोदया ये माननीय सरकार के लोगों के उपर है

कि झूठी शान के परिंदे ही ज्यादा फड़फड़ाते हैं, तरक्की के बात की उड़ान में कभी आवाज नहीं होती । यह झूठी शान लेकर आप जो फड़फड़ाने का काम करते, निश्चित रूप से आनेवाले समय में जनता ने मैनडेट के द्वारा, वोट के द्वारा जो इनको जवाब देने का काम किया है, वह आनेवाले समय में निश्चित रूप से जो जुमलाबाजी करते, उनके जुमलाबाजी का जवाब देगी । इन्हीं चंद शब्दों के साथ, पुनः हम अपने तमाम् साथियों से कहना चाहेंगे कि आज चिंतन और मनन करने की जरूरत है, मैं इस बात को कहते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूँ । जय हिन्द ।

सभापति(डॉ0 रंजू गीता) - माननीय सदस्य श्री वशिष्ठ सिंह, आपका समय 15 मिनट है ।

टर्न-17/शंभु/23.03.18

श्री वशिष्ठ सिंह : महोदया, आज युवा और कला संस्कृति बजट के पक्ष में और कटौती प्रस्ताव के विपक्ष में बोलने के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ । महोदया, मैं आपके प्रति आभार प्रकट करता हूँ । महोदया, कल बिहार दिवस पूरे बिहार राज्य में ही नहीं, देश में ही नहीं, विश्व स्तर पर मनाया जा रहा है । बिहार दिवस 1912 में 21 मार्च को बंगाल से अलग होकर 22 मार्च को बिहार राज्य अस्तित्व में आया था और उसी के अवसर पर हमारे लोकप्रिय मुख्यमंत्री परम आदरणीय नीतीश कुमार जी ने बिहार दिवस मनाने का निर्णय लिया । आज बिहार दिवस मनाने से पूरे बिहार के युवाओं में खुशी की लहर है और हम अपने आप को गौरवान्वित महसूस करते हैं । बिहार राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है । एक जमाना था जब बिहार का नाम लेने पर लोग भड़क जाते थे, बिहार का नाम लेने पर हम लोग ट्रेन में जाते थे और लोग पूछता था कि आप कहां से आये हैं, कहां के रहनेवाले हैं तो हमलोग बताते थे बिहार के तो लोग संकुचित महसूस करने लगते थे, भड़क जाते थे, मजाक उड़ाते थे । वह समय था 15 साल पहले वाला और आज जब मुख्यमंत्री आदरणीय नीतीश कुमार जी ने 2005 नवम्बर में सत्ता संभाला उसके बाद बिहार की तकदीर और तस्वीर दोनों बदली है । साथियों इस बात को कहने से कोई इनकार नहीं कर सकता है । बिहार हर मामले में आगे गया है । विपक्ष के लोगों की जब 15 साल सरकार थी तो ये लोग काम में विश्वास नहीं करते थे, इनके पास कोई सिस्टम नहीं था । ये लोग बकवास की राजनीति करते थे, लेकिन हमारे नेता आदरणीय नीतीश कुमार जी विकास की राजीनीति की बात करते हैं । ये लोग फिजूल की बात करते हैं हमलोग काम की बात करते हैं । इनलोगों को चरवाहा विद्यालय बनाकर के बिहार के पैसा को शोषण करने का काम करते थे और हमारे नेता नीतीश कुमार जी ने इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज और पोलीटेक्नीक कॉलेज बनाकर के बिहार के युवाओं को, छात्रों को पढ़ने के लिए प्रेरित करने का काम कर रहे हैं । महोदया, इतना ही नहीं आज के बिहार और पहले के बिहार में धरती आसमान का अंतर हो चुका है । आज का बिहार बिल्कुल कहीं भी इस देश में नहीं, विश्व के किसी भी मानचित्र पर बिहार का जब हमलोग नाम लेते हैं तो हमलोगों

का सीना चौड़ा हो जाता है और बिहार के लोग अपने आप को सम्मानित महसूस करते हैं । आज बिहार के नेता आदरणीय नीतीश कुमार जी ने साढ़े 13 एकड़ में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का संग्रहालय पटना की धरती पर बनाने का काम किया और जब बन रहा था तो कुछ विपक्ष के लोग कह रहे थे कि इस जमीन को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के संग्रहालय बनाने का कोई मकसद नहीं था, लेकिन आज जो अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय बना उसका नतीजा है कि विदेश के लोग भी आकर के उसको देख रहे हैं और विश्व में अपनी पहचान वह अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय ने बनाया है । इतना ही नहीं महोदया, नालन्दा के पुरातात्विक स्थल को, स्मारक को आज पुरातात्विक की स्वीकृति मिली है । पहले एक मात्र महाबोधि मंदिर को ही मिला था, लेकिन एक नालन्दा को भी मिलने का काम हुआ है । श्रावणी मेला जब आता है तो श्रावणी मेले के अवसर पर सुल्तानगंज हो, चाहे कमरसार हो, चाहे शेरशाह महोत्सव हो, दशरथ मांझी महोत्सव हो, हरिहर क्षेत्र में महोत्सव हो, चाहे जे0पी0महोत्सव हो या कर्पूरी महोत्सव हो यह सारी महोत्सव हमारी सरकार मनाकर के और युवाओं को आगे लाने का काम कर रही है, प्रेरित कर रही है । महोदया, इतना ही नहीं पटना का जो गोलघर है- इनलोगों के शासन में वह गोलघर जीर्णशीर्ण अवस्था में पड़ा हुआ था और आज उस गोलघर के भीतर आकर्षक मल्टी मीडिया लेजर शो का आयोजन किया जा रहा है और हजारों की संख्या में युवा और बच्चे जाकर उसको देखने का काम करते हैं । लोक नारायण जयप्रकाश जी के पैत्रिक गांव सिताब दियारा में स्मृति भवन एवं पुस्तकालय भवन का निर्माण पूर्ण हो चुका है । यह जय प्रकाश जी ने देश की आजादी के बाद दूसरी आजादी जो कांग्रेस की हुकूमत राजशाहियों की हुकूमत चलती थी उसके खिलाफ बिहार से शंखनाद किये थे और जय प्रकाश जी ने कांग्रेस की हुकूमत को हटाकर के इंदिरा गांधी जी जैसे प्रधानमंत्री को भी परास्त करने का काम किया था । यह बिहार की धरती है । मैं कहता हूॅं कि बिहार है वीरों का, जहान जानता है, धरती जानती है, आसमान जानता है, पर्वत-पठार सागर, तूफान की बात छोड़ो, यह भगवान जानते हैं, यह भगवान जानते हैं, यह भगवान जानते हैं । यह बिहार अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण राज्य है । हमारे नेता परम आदरणीय मुख्यमंत्री जी मॉरिशस गये और मॉरिशस के प्रधानमंत्री पहले के पूर्वजों के बिहार का ही बेटा आज वहां प्रधानमंत्री बने हुए हैं । मॉरिशस और बिहार के कल्चर, संस्कृति एक जैसी है । वहां से प्रधानमंत्री आये और बिहार का मान-सम्मान बढ़ाया और बिहार और मॉरिशस में संस्कृति का आदान-प्रदान होता है । इतना ही नहीं महोदया, बिहार कला दिवस के अवसर पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया जिसमें 24 कलाकारों को पुरस्कार प्रदान किया गया । हमलोग के शासन में अच्छा जो काम करता है उसको पुरस्कार दिया जाता है और विपक्ष के शासन में जो ज्यादा अत्याचार करता था, अपराध करता था उसको पुरस्कार देने का काम करते थे, दोनों सरकार में यही अंतर है । मैं आपको बताना चाहता हूॅं । बिहार में फिल्म के विकास हेतु फिल्मसिटी का निर्माण राजगीर नालन्दा में किया जाना है जिसके लिए 20 एकड़ भूमि अधिगृहित किया गया है । आज देख लीजिए बिहार के नौजवान गायक, पवन

कुमार जैसे लोग गायक बन रहे हैं, खेसारी लाल यादव जैसे लोग गायक बन रहे हैं, राकेश मिश्रा जैसे लोग गायक बन रहे हैं और गायक ही नहीं बल्कि भोजपुरिया अभिनेता बनकर के पूरे बिहार को ही नहीं, पूरे देश का मान-सम्मान बढ़ाने का काम करते हैं और इस मुल्क में जहां भोजपुरी बोलने वाले लोग हैं उसका भी मान-सम्मान बढ़ाने का काम किया है इन नौजवानों ने । इतना ही नहीं महोदया, राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता 2017-18 में 24 लोगों को सम्मान दिया गया था, जिसमें 5 स्वर्ण, 4 रजत, 15 कांस्य पदक से सम्मानित किया गया था । स्टेडियम निर्माण हेतु 2008-09 से 2017-18 तक 287 हमारे - एक विपक्ष के साथी बोल रहे थे हमारे माननीय सदस्य जी बोल रहे थे कि कोई स्टेडियम का निर्माण नहीं हुआ है, ये गलत बोल रहे हैं । मैं जिस विधान सभा से आता हूँ । करगहर हमारा विधान सभा क्षेत्र है और करगहर बाजार में जो स्कूल है उसके विद्यालय के स्टेडियम का निर्माण हुआ है । इन लोगों को विकास नहीं दिखता है, विकास के बुनियाद पर इनकी राजनीति नहीं है, अगर विकास के बुनियाद पर इनकी राजनीति होती - हमारे नेता आदरणीय नीतीश कुमार दिन रात विकास के लिए संघर्ष कर रहे हैं, विकास के लिए काम कर रहे हैं, जनता की सेवा कर रहे हैं, जनता की खिदमत के लिए खड़ा होकर संघर्ष कर रहे हैं और इनके नेता आज कहां पड़े हुए हैं । इसी से आप समझ लीजिए कि हमारे नेता और इनके नेता में कितना अंतर है । हमारे नेता कहते हैं कि मेरा न कोई भाई है, न मेरा कोई बेटा है । अगर मेरा कोई भाई है, मेरा कोई बेटा है तो बिहार की जनता मेरा भाई और बिहार का नौजवान मेरा बेटा है, मेरा कोई दूसरा बेटा नहीं है और ये लोग कहते हैं कि बिहार का बेटा हमारा बेटा नहीं है, बिहार का युवा बेटा नहीं है । मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि अगर इनकी पार्टी के सुप्रीमो बिहार के युवाओं को बेटा मानते, बिहार के भाईयों को भाई मानते, जनता को भाई मानते तो मैं पूछना चाहता हूँ एक सवाल विपक्ष के नेता तो उपस्थित नहीं है, लेकिन उनकी पार्टी के सदस्य हैं । मैं एक सवाल पूछना चाहता हूँ कि हमारे गार्जियन समान, इस सदन में गार्जियन के रूप में बैठे हुए हैं अब्दुल बारी सिद्दिकी जी- क्या इनसे सीनियर हैं विपक्ष के नेता, क्या उनको ज्यादा अनुभव है? आखिर जब अनुभव नहीं है, सीनियर नहीं है, जब हमारे इलियास साहब से सीनियर नहीं हैं, जब हमारे ललित बाबू से सीनियर नहीं हैं तो विपक्ष के नेता कैसे बन गये ? हम यह पूछना चाहते हैं । इसका मतलब है कि ये लोग वंशवाद की राजनीति करते हैं, इसका मतलब है कि ये परिवारवाद की राजनीति करते हैं, ये समाज की राजनीति नहीं, ये विकास की राजनीति नहीं करते हैं, ये परिवार और वंशवाद की राजनीति करते हैं । इसका प्रमाण है कि एक बार का जीता हुआ व्यक्ति आज विपक्ष के नेता के पद पर बैठा हुआ है और वहीं पर हमलोगों के गार्जियन के रूप में एक माननीय सदस्य बैठे हुए हैं उनके विपक्ष का भी कुर्सी छीन लिया गया । यह दुर्भाग्य की बात है । यह सदन शर्मसार हो रहा है । हम आपसे कहना चाहते हैं महोदया, इतना ही नहीं आज के सवाल पर और हमारे माननीय सदस्य बोल रहे हैं मैं तो दावे के साथ कह सकता हूँ कि 40 वर्ष कांग्रेस के लोगों ने और 15 वर्ष आर0जे0डी0 के

लोगों ने बिहार को लूटने का काम किया, बिहार को बर्बाद करने का काम किया । बिहार टूटे हुए बिहार को, बिखरे हुए बिहार को, बदनाम हो चुके बिहार को जो इनलोगों ने बिहार को बर्बाद किया था टूटे हुए बिहार को, बिखरे हुए बिहार हो, बदनाम कर चुके बिहार को हमारे नेता आदरणीय नेता नीतीश कुमार ने संवारने का काम किया, सुंदर बनाने का काम किया और देश के मानचित्र पर एक नंबर पर खड़ा करने का काम किया । यह मैं आपको बताना चाहता हूँ । महोदया, इतना ही नहीं पंचायती राज के सवाल पर हमारे विपक्ष के महोदय लोग बोल रहे थे । हम कहना चाहते हैं कि पंचायती राज में जिन लोगों को विपक्ष के लोगों ने बोतल में जिन्न के रूप में- जिन लोगों ने अति पिछड़ा समाज को माननीय नेता नीतीश कुमार जी ने पंचायत के चुनाव में 20 परसेंट आरक्षण देने का काम किया और उसी समाज को विपक्ष के लोग जिन्न कहते थे और जिन्न कहकर के बोतल में रखने का काम करते थे, केवल उनका वोट लेते थे और वोट लेने के बाद बिहार को लूटते थे, अति पिछड़ा को कोई पूछता नहीं था। हमारे नेता ने अति पिछड़ा समाज को बोतल से बाहर लाया और बोतल का जो जिन्न था उसको 20 परसेंट आरक्षण देकर समाज की मुख्य धारा में जोड़ने का काम किया ।

क्रमशः

टर्न-18/अशोक/ 23.01.2018

श्री बशिष्ठ सिंह : क्रमशः.. समाज के मुख्य धारा में जोड़ने का काम किया, मुखिया बनाने का काम किया, जिला पर्षद का चैयरमैन बनाने का काम किया, प्रमुख बनाने का काम किया यही दोनों में फर्क है, हमारे नेता नीतीश जी में और उनके नेता में यही फर्क है महोदया । इतना ही नहीं हर जगह पर कई-कई पंचायतों में, पंचायत सरकार भवन बना, यह हमारी सरकार की सोच है कि हर पंचायत की मांग ब्लॉक पर नहीं, पंचायत सरकार में ही सारी समस्या का निबटारा करे, इसी उद्येश्य से हमारी सरकार ने यह बनाने का काम किया । जहां अनुसुचित जाति, हमारे माननीय सदस्य राजेन्द्र बाबू उठ कर खड़ा हो रहे थे, राजेन्द्र बाबू याद कीजिये कि मुखिया के पद पर अनुसूचित जाति को एकल पद पर आरक्षण नहीं था, अगर देने का काम किया तो हमारे नेता नीतीश कुमार ने काम किया और आपलोग जो आरक्षण की बात करते हैं, आपलोग जो आरक्षण की बात करते हैं, मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि जब तक सूरज चांद रहेगा, जब तक नीतीश कुमार का नाम रहेगा, और जब तक नीतीश कुमार रहेंगे तबतक आरक्षण कोई हटा नहीं सकता है, मैं इस बात को दावे के साथ कह सकता हूँ । महोदय, इतना ही नहीं, महोदया इतना ही नहीं, महोदया इतना ही नहीं, मैं आपसे कहना चाहता हूँ, महोदया आपसे कहना चाहता हूँ कि आज पंचायती प्रतिनिधियों को महोदया, पंचायत प्रतिनिधि में हमारे सदस्य बोल रहे थे, एक हमारे सदस्य बोल रहे थे कि मुखिया को, पंचायत समिति को और जिला पर्षद को मनरेगा में हमारे मंत्री, मंत्री श्रवण कुमार जी ने मनरेगा में 30

प्रतिशत, 20 प्रतिशत का देकर के सभी पंचायत समितियो को और जिला पर्षदों को अधिकार देने का काम किया । इतना ही नहीं महोदया, जो हमारे सरपंच होते हैं जो हमारे मुखिया होते हैं, बी.डी.सी. के मेम्बर होते हैं सब को दैनिक भत्ता देने का काम हमारी सरकार करती है । ये क्या बात करते हैं, इनके जमाने में, तो केवल लाठी चलती थी और हमारे जमाने में लाठी नहीं, कलम चलती है, कलम चलती है, कलम चलती है । हम आपसे कहना चाहते हैं महोदय, अब ज्यादा कुछ नहीं कहते हुये मैं यहां पर खान भूतत्व मंत्री जी बैठे हुये हैं, हम आग्रह करना चाहते हैं महोदया, सासाराम में भी कुछ जगह ऐसे हैं, जब माननीय मुख्यमंत्री जी वहां गये थे तो प्रधान सचिव जी के द्वारा एक बात आई थी कि 3-4 ब्लॉक ऐसे हैं, जिनको माईनिंग के माध्यम से लीज कर दिया जाय तो उस इलाके की जो गिट्टी की समस्या है वह समाप्त हो जायेगा लेकिन अभी तक उस पर कुछ किया नहीं गया । हम मांग करते है कि अगर माईनिंग जैसा पहाड़ है, अगर उसको किया जा सकता है नियम के आलोक तो उस कर दिया जाय अगर नहीं किया जाता है तो साफ जवाब दे दिया जाय कि नहीं चलेगा । इसलिये माननीय महोदया अब ज्यादा कुछ नहीं कहते हुये मैं फिर एक बार अपने परम आदरणीय नेता नीतीश कुमार जी और केन्द्र सरकार के नरेन्द्र मोदी जी का कोटि-कोटि नमन करते हुये अपनी बात को समाप्त करता हूँ । धन्यवाद । जयहिन्द ।

सभापति(डा0 रंजू गीता) : माननीय सदस्य श्री विजय कुमार खेमका । आपका समय 11 मिनट है ।

श्री ललित कुमार यादव : महोदया, मैं नियमापत्ति पर हूँ ।

सभापति(डा0 रंजू गीता) : माननीय सदस्य श्री विजय कुमार खेमका जी, थोड़ा सा । बोलिये ।

श्री ललित कुमार यादव : महोदया, मैं नियमापत्ति पर हूँ । बशिष्ठ नारायण जी, जो माननीय सदस्य थे, नेता प्रतिपक्ष..

सभापति(डा0 रंजू गीता) : बशिष्ठ नारायण नहीं हैं,बशिष्ठ हैं सिर्फ ।

श्री ललित कुमार यादव : बशिष्ठ हों या बशिष्ठ नारायण हों । जो भी हों, माननीय सदस्य हों, आप सुन लीजिये महोदया, नेता प्रतिपक्ष हमारे पार्टी में कौन होंगे, नहीं होंगे जदयू वाले को क्यों इतना चिंता है ?....

सभापति(डा0 रंजू गीता) : माननीय सदस्य श्री विजय कुमार खेमका ।

श्री विजय कुमार खेमका : सभापति महोदया, मैं 2018-19 के लिये पेश कला संस्कृति एवं युवा विभाग के कटौती प्रस्ताव के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ । सभापति महोदया, आज आपने सरकार के पक्ष में बोलने का मुझे अवसर दिया इसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूँ साथ ही बिहार के मुखिया आदरणीय नीतीश कुमार जी को और बिहार के उप-मुखिया, उप मुख्यमंत्री आदरणीय श्री सुशील कुमार मोदी एवं पूर्णिया की महान जनता का भी आभार प्रकट करता हूँ । महोदया,

पूर्व में खेलने कूदने को हमारे यहां खराब कहा जाता था जो खेलते कूदते थे, उनको लोग अच्छी दृष्टि से नहीं देखेते थे परन्तु आज जामना बदला है बिहार बढ़ रहा है, बिहार विकास की ओर है और बिहार में पढ़ोगे लिखोगे तो होगे विद्वान और खेलोगे कूदोगे तो होगे बलवान और बुद्धिमान चरितार्थ हो रहा है महोदया । महोदया, बिहार की गौरव गाथा से आज कौन परिचित नहीं है । पूरे देश में और पूरे विश्व में बिहार की गौरव गाथा का डंका बज रहा है और पूरा समाज और देश इससे परिचित है । महोदया, यहां विद्वता में एकता है, यहां विविधता में एकता है, गंगा की कल-कल धारा, रंग बिरंगे त्योहार और छठ मैया की गीत तो कानों के नजदीक पहुंच जाते हैं और आज भी छठ का दूसरा अर्घ्य है । महोदया, हमारे यहां विद्यापति के गीत, मिथिला की पेन्टिंग देखने को भी बनती । सामा-चकेवा का खेल और जट-जटीन का खेल जब हम देखते हैं तो मन मंत्र मुग्ध हो जाता है । जिझीया झूमर और अल्हारूदल तो मन को छू जाता है । चैता का सुर, विस्मिल्ला खां की शहनाई पूरे देश और विश्व में गूंजयमान है महोदया । लोरिक , विषहरी, विहुल की गााथ, सुपज डोम और हिरा की चर्चा तथा रहसु के झांकी, भिखारी ठाकुर के गीत, कला संस्कृति के क्षेत्र में बिहार की महोदया अलग पहचान बनाये हुये है । बिहार का गौरव गीत कला और संस्कृति की उसमें झलक मिलती है । महोदया, बिहार खेल जो है राज्य और देश का आइना है, खेल राज्य का देश में तथा देश का विश्व में एक विशिष्ट पहचान बनाती है महोदया । पहले कला संस्कृति एवं खेल का बजट बहुत छोटा हुआ करता था, मैं धन्यवाद दूंगा माननीय मुख्यमंत्रीजी एवं उप मुख्यमंत्रीजी को जिन्होंने कला,खेल एवं संस्कृति के विकास के लिए इस बजट में लगभग एक अरब चालीस करोड़ का प्रावधान किया है । महोदया, विपक्ष को विकास नजर नहीं आता है । हमारे भाई अभी बोल रहे थे बता रहे थे लेकिन महोदया यह कौन सा चश्मा पहनते हैं कि जिसका रंग कैसा है यह पूरे बिहार की जनता समझ नहीं पाई है, कौन सा रंग है इनके चश्मा के हां महासेठ जी बोल रहे थे, सकारात्मक सोच रखते हैं, बिहार भी सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ रहा है लेकिन हमारे और मित्र जो हैं वे किस तरह की सोच रखते हैं यह बिहार की जनता जान रही है । महोदया, आज कला संस्कृति एवं खेल के क्षेत्र में बिहार विश्व पटल स्थापति हो रहा है महोदया, एन.डी.ए. की सरकार युवाओं के लिए समर्पित है । केन्द्र और राज्य की सरकार युवा के विकास सहित रोजगार और समृद्धि के प्रति समर्पित है । युवा को सुविधायुक्त भागीदारी के लिए खेलों में ज्यादा से ज्यादा उनके प्रोत्साहन के लिए सरकार के द्वारा खेल नीति,2018 के निर्माण हेतु टास्क फोर्स का भी गठन किया गया है महोदया । ग्रामीण युवाओं को खेल के क्षेत्र में युवओं को ज्यादा से ज्यादा अवसर प्राप्त हो इसके लिए 113

स्टेडियम का निर्माण पूर्ण कर लिया गया है लेकिन हमारे मित्र भाइयों को स्टेडियम नजर नहीं आता है । महोदया, जो हमारे विपक्ष में साथी बैठे हैं उनके यहां अगर नहीं बना है तो 51 लिस्ट, स्टेडियम निर्माण की स्वीकृति में प्रदान किय गया है, आपके यहां भी बनेगा मित्र, साथियों । महोदया, सरकार एवं खेल मंत्री से मेरा आग्रह है कि हमारे खेल मंत्री हमारे ही जिला से हैं महोदया, हम इनका ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं कि नगर और शहर में स्टेडियम हैं लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में जो विधान सभा ग्रामीण और शहरी क्षेत्र से जुड़ा हुआ है, मेरा भी विधान सभा क्षेत्र पूर्णिया में, पूर्णिया पूरब 14 पंचायत का प्रखण्ड है, लेकिन वहां स्टेडियम नहीं बना है इसलिये मैं आपका ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूँ । महोदया, उस ओर बैठे हमारे जो भाई है, नौजवान युवाओं का विकास उनको पचता नहीं है इसलिये कि युवा देश का भविष्य है, युवा देश की धड़कन है, यह देश युवाओं का है, यह प्रदेश युवाओं का है और यह एन.डी.ए. की सरकार भी युवाओं की सरकार है और हमारे मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि हमारे मंत्री विनोद सिंह जी हमारे मंत्री कामत जी भी युवा है इसलिये विपक्ष के लोगों को मैं कहना चाहता हूँ , महोदया मैं बतलाना चाहता हूँ कि बिहार विकास की ओर बढ़ रहा है। महोदया, उस ओर बैठे हमारे जो भाई हैं । क्रमशः...

टर्न-19/23-03-2018/ज्योति

क्रमशः

श्री विजय कुमार खेमकाः महोदय, मैं उस ओर बैठे जो हमारे भाई हैं, मैं कह रहा था इनको विकास पचता नहीं है । ये बिहार के होनहार युवाओं को चरवाहा विद्यालय में भेजना चाहते हैं । महोदया, ये जो हमारे भाई हैं, ये भैंस के पीठ पर बैठने की युवाओं को ट्रेनिंग देना चाहते हैं । देश के प्रधानमंत्री, नरेन्द्र भाई मोदी और बिहार के मुखिया नीतीश कुमार जी और उप मुखिया सुशील कुमार मोदी जी न्यू इंडिया बनाना चाहते हैं और न्यू इंडिया में युवाओं की भागीदारी करवाना चाहते हैं । बढ़ता बिहार जो युवाओं के लिए, उनका चेहरा बराबर खिलता और चमकता रहे, इसके लिए, हमारी सरकार सोच रही है और युवा महोत्सव का सफल आयोजन भी पूर्णिया में हुआ, जिसमें 38 जिलों के खिलाड़ी तथा कलाकारों ने अपनी प्रस्तुती देने का काम किया है । बिहार की जनता की ओर से मैं अपने जो कला संस्कृति मंत्री हैं, उनको भी धन्यवाद देना चाहता हूँ और बिहार और पूर्णिया के खिलाड़ी खेल प्रेमी की भी ओर से उनका धन्यवाद करना चाहता हूँ और विभाग के जो अधिकारी हैं उनकी मेहनत पर कला संस्कृति और युवा विभाग आगे बढ़ रहा है, उनको भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ । पूर्णिया सहित बिहार राज्य के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में आधुनिक खेल मैदान का

निर्माण एवं बने हुए खेल मैदान के जीर्णोद्धार के लिए भी मैं मंत्री जी से आग्रह करना चाहता हूँ । महोदया, पिछली सरकार में बिहार क्रिकेट एसोसियेशन मृतप्राय था, मैं विपक्ष के साथियों से बताना चाहता हूँ कि एन.डी.ए. की सरकार में इसमें जान फूंकने का काम किया है । इसे जीवंत करने का काम किया है । बी.सी.ए. के साथ एम.ओ.यू. करने की कार्रवाई की जा रही है । राजगीर में 633 करोड़ की लागत से, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्पोर्ट्स एकेडमी था, क्रिकेट स्टेडियम का भी निर्माण किया जा रहा है । मोईनुल हक स्टेडियम जो पटना में है, उसे विश्व स्तरीय बनाने की भी कार्रवाई की जा रही है लेकिन विपक्ष के हमारे भाईयों को कला, संस्कृति एवं युवा विभाग जो बढ़ रहा है, उन्हें दिखायी नहीं पड़ रहा है । पूरे राज्य में और इस नाते मैं पूर्णिया रंगभूमि जो स्टेडियम बना हुआ है, इसलिए कि पूर्णिया पुराना 1770 का जिला है, प्रमंडल मुख्यालय है, वहाँ एक स्टेडियम है और वहाँ क्रिकेट खेल के प्रोत्साहन के लिए मैं मंत्री जी को याद दिलाना चाहूँगा, वहां फ्लड लाईट की व्यवस्था हो और स्टेडियम के आधुनिकीकरण करने की ओर भी मैं उनका ध्यान दिलाना चाहता हूँ । 661 लाख प्रति इकाई की लागत से 8 जिले में व्यायामशाला सह खेल के मैदान की भी स्वीकृति इस सरकार में मिली है, खेल मंत्रालय ने दिया है लेकिन विपक्ष के हमारे साथियों को बिहार में विकास नजर नहीं आता है । कौन सा चश्मा इनको पहनाया जाय, कौन से चश्मा से ये देखें ताकि इनको बिहार नजर आवे । महोदया, खेल के क्षेत्र में विकास चाहते हैं । हमारे मंत्री जी, सभी विधायकों का भी विशेष ध्यान रखते हैं । सभापति महोदया, राज्य सरकार कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रही है । सांस्कृतिक धरोहर एवं पुरातात्विक भग्नावशेष को भी संरक्षित करने की दिशा में यह सरकार काम कर रही है । सांस्कृतिक संरचना निर्माण योजना के तहत 8.19 करोड़ की लागत से पूर्णिया, दरभंगा, सहरसा प्रमंडल मुख्यालय में प्रेक्षागृह एवं आर्ट गैलरी के निर्माण की स्वीकृति दी गयी है । मैं, कला एवं संस्कृति मंच के कला एवं संस्कृति विभाग के मंत्री जी का ध्यान ले जाना चाहता हूँ कि हमारे पूर्णिया में एक बेलोरी में माँ शीतला का एक वार्षिक मेला लगता है । वह बड़ा मेला लगता है जिसमें एक लाख से ज्यादा लोग आते हैं । नेपाल, बंगाल, उड़ीसा और हमारे झारखंड से भी वहाँ काफी लोग आते हैं, इसलिए मैं मंत्री जी का ध्यान आकृष्ट करुंगा कि उसे राजकीय मेला घोषित करने का अगर आप काम करेंगे, तो पूर्णिया की जनता आपकी आभारी रहेगी ।

सभापति (डा0 रंजु गीता): अब आप समाप्त करें ।

श्री विजय कुमार खेमका: महोदया, एक मिनट में मैं अपनी बात समाप्त करुंगा । एन0डी0ए0 की सरकार गांव, गरीब, किसान की सरकार है और पंचायती राज में हर कोई को हमारे जो त्रिस्तरीय पंचायती राज के जो प्रतिनिधि हैं, उनके मान सम्मान की चिन्ता एन.डी.

ए. की सरकार में है और इसी पंचायती राज में गांवों का विकास कैसे हो, इसलिए कि यह सरकार गांव गरीब किसान की सरकार है, युवाओं की सरकार है, मजदूरों की सरकार है, उसकी चिन्ता इस सरकार ने की है और सात निश्चय में दो निश्चय जो जल से नल है और गांव को छोटी छोटी सड़कों से जोड़ना है, उसके लिए विशेष चिन्ता की गयी है और गांव में पंचायती राज में और वहॉ पर हमारे यहां 330 पंचायत में, पंचायत सरकार भवन निर्माण की योजना बनायी गयी है और मैं पंचायती राज मंत्री से भी आग्रह करना चाहूँगा कि गांव में पंचायत सरकार भवन बनने वाले हैं और जहां बन गए हैं, हमारे पूर्णिया विधान सभा में एक पंचायत है,जहॉ पंचायत सरकार भवन बनकर तैयार है, परन्तु प्रारम्भ नहीं हुआ है, मैं मंत्री जी का ध्यान आकृष्ट कराना चाहूँगा ताकि ऐसे पंचायत सरकार भवन जो पूरे बिहार में हैं, जो चालू नहीं हुए हैं, उनको सुविधाा युक्त और साधनयुक्त बना कर चालू निश्चित रुपेण कराया जाय और आज हमारे खनन मंत्री भी यहॉ उपस्थित हैं और खनन की जब बात आती है, तो बालू, बालू, बालू की चर्चा बराबर होती रहती है लेकिन हमारे भाईयों को हमारे मित्रों को हम बताना चाहेंगे कि मित्रों साथियों और सभापति महोदया, बालू पहले क्या था, पहले उसमें कौन थे, कैसी स्थिति थी, कैसी परिस्थिति थी, यह पूरा बिहार जान रहा है । आज राज्य सरकार अवैध खनन की रोक-थाम के लिए जिले में टास्क फोर्स का गठन की हुई है ।

सभापति (डा0 रंजु गीता): अब आप समाप्त करें ।

श्री विजय कुमार खेमका: महोदया, एक सेकंड में मैं अपनी बात खत्म करुंगा, बोलना नहीं होगा । हमारे विपक्ष के भाई कहते हैं लेकिन करते नहीं हैं । बालू माफिया में कौन कौन लोग आए, कैसे हुआ, यह सारा पूरा बिहार जानता है । मैं खनन मंत्री जी का........

सभापति (डा रंजु गीता): आप समाप्त करें ।

श्री विजय कुमार खेमका: मैं समाप्त कर रहा हूँ । मैं खनन मंत्री जी का पूर्णिया की ओर विशेष ध्यान आकृष्ट करवाना चाहता हूँ कि वहॉ कोशी नदी है, कोशी नदी में सफेद बालू नदी के किनारे घाटो पर रहता है और वहॉ पर अवैध खनन हो रहा है, इसलिए मैं मंत्री जी से कहना चाहूँगा कि वहॉ अवैध खनन को रोकते हुए, इसलिए कि अवैध खनन होगा, तो कोशी की धार बदलेगी और आने वाले समय में वह बाढ़ का क्षेत्र है, वह पूरा क्षेत्र प्रभावित होगा, उसमें जो लिप्त खनन पदाधिकारी हैं, जिसके मिलीभगत से वहॉ पर यह खनन हो रहा है, उनको वहॉ से निलंबित करने की और अवैध खनन को रोकने की मांग करता हूँ । महोदया, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको धन्यवाद देता हूँ । जय भारत, जय बिहार, जय पूर्णिया ।

सभापति (डा0 रंजु गीता): आदरणीय, अब्दुल बारी सिद्दिकी जी, आपका समय 15 मिनट ।

श्री अब्दुल बारी सिद्दिकीः सभापति महोदया, मैं आपका आभारी हूँ कि हमारे कुछ साथियों ने मुझसे अनुरोध किया कि कला, संस्कृति और युवा विभाग पर, आप भी अपनी कुछ राय दें। मैं बिना तैयारी के आया था । मगर फिर भी अपने अनुभव के हिसाब से अभी मंगाया फोल्डर्स तो समीर महासेठ जी ने जो कटौती का प्रस्ताव रखा है, उसके समर्थन में मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ । अभी माननीय मंत्री जी ने तीन फोल्डर वितरित किए हैं माननीय सदस्यों को । एक में तो उनका वक्तव्य है, दूसरे में वार्षिक प्रतिवेदन है और तीसरे में योजना परिचय है, यह तीनों फोल्डर बड़ा खूबसूरत छपा है, रंगीन है और बहुत सारी रंगीन तस्वीरें भी हैं इसमें, मगर जितनी रंगीन ये फोल्डर्स हैं, उतना रंगीन विभाग नहीं है । अफसोस है मुझे, इस वजह से कि मैं भी इस विभाग का मंत्री रहा हूँ । मेरा तो अगर चलता, तो बहुत सारे विभागों का पैसा काट कर इस विभाग को यानि कला,संस्कृति और युवा विभाग में ज्यादा से ज्यादा राशि मैं इसे मुहैय्या कराता ।

क्रमशः

टर्न-20/23.3.2018/बिपिन

श्री अब्दुल बारी सिद्दिकीः क्रमशः... मगर यह जो वित्त मंत्री जी का बजट भाषण है, कितना आपका चलता है और कौन-कौन-सी स्कीम आप इन्क्लुड करा पाते हैं ।

महोदया, अब आप खुद इससे समझ लीजिए कि इस विभाग को कितनी प्रायरिटी में रखा है सरकार ने कि बजट में जो प्रावधान किए गए हैं, वर्ष 2017-18 में कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के स्कीम मद में 97.95 करोड़ रूपया तथा स्थापना एवं प्रतिबद्ध व्यय में 79.60 करोड़ रूपया, कुल प्राक्कलन 137.55 करोड़ था जो 2018-19 में 44.40 करोड़ तथा स्थापना एवं प्रतिबद्ध में, मतलब, आश्चर्य होता है कि जितनी राशि विभिन्न स्कीमों में प्रावधान किए गए हैं, उससे ज्यादा राशि प्रतिबद्ध व्यय में है, मतलब, वह देना ही देना है, सैलरी में, पेंशन में, बहुत सारे स्कीम्स में ।

महोदया, चूंकि माननीय मंत्री जी, मुझको इस विभाग से लगाव भी है और मैं आपको और इस सदन को बता दूं कि जब माननीया राबड़ी देवी जी मुख्यमंत्री बनी थीं तो उस वक्त मुझको विभाग आवंटित किया गया था राजस्व विभाग, मगर उसी दौरान मुझे युवा महोत्सव में, वर्ल्ड यूथ फेस्टिवल में क्यूबा जाना था । मैंने पूछा अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष जी से कि कौन-सा विभाग दिया तो उन्होंने कहा कि राजस्व विभाग दिया । मैंने कहा कि स्पोर्ट्स, कल्चर किसको आपने दिया ? अब नाम नहीं बताएंगे, उन्होंने कहा कि फ्लां को दिया, हमने कहा कि नहीं-नहीं, स्पोर्ट्स मेरे साथ रहने दीजिए । तो उन्होंने एक तरह से झिड़कते हुए मुझसे कहा कि इतना बड़ा विभाग दिया है, स्पोर्ट्स और कल्चर में तुम रहना चाहते हो, सो जाओ, जाओ, जो है उसी में रहना पड़ेगा । मैंने एयरपोर्ट से फिर टेलिफोन किया अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष को कि मुझको स्पोर्ट्स एवं

कल्चर में ही रहने दीजिए, रेवेन्यू किसी दूसरे को दे दीजिए और ऐसा ही हुआ । स्पोर्ट्स एंड कल्चर में मैं रह गया । हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष अक्सरहां मुझ पर यह तंज किया करते थे, लोगों को यह कह कर कि देखिए, इसको इतना बड़ा विभाग मिला है मगर इसने फुटबॉल थाम लिया । मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यह जो विभाग है कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, यह पीढ़ी–दर–पीढ़ी को बनाने का काम करती है । यह विभाग जो है, इससे देश और दुनिया में स्टेट की छवि बनती है । यह विभाग वह विभाग है जिसे लोग समझते हैं कि यह सिर्फ मनोरंजन का विभाग है या मनोरंजन का साधन है । मेरा मानना है कि स्पोर्ट्स और कल्चर सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं है बल्कि विकास का एक सशक्त माध्यम है और यही वजह है कि वे विकसित देश जो खेल के मामले में काफी विकसित हैं, वे अपने खेल के मार्फत दुनिया में जाने जाते हैं। अब आज कोई पूछे कि ब्राजील का प्राइम मिनिस्टर कौन है, ब्राजील का प्रेसिडेंट कौन है, कोई नहीं बताएगा । आज पूछे कि पुरजोरो किस लिए जाना जाता है, अर्जेन्टाइना किसके वजह से जाना जाता है तो लोग कहेंगे कि ब्राजील जो है वह फुटबॉल के वजह से जाना जाता है, पेले के वजह से जाना जाता है, रोनाल्डो के वजह से से जाना जाता है, अभी का जूनियर नहीं, सिनियर रोनाल्डो । मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि जिस विभाग पर सरकार का, चाहे मेरी सरकार हो या शॉर्टकट में विपक्ष में रहने वाले लोग, जो शॉर्टकट करके आ गए हैं सरकार में, उनकी सरकार हो, मगर इसमें है कि इस विभाग पर ज्यादा तवज्जो देने की जरूरत थी । यह दुर्भाग्य है कि तवज्जो नहीं दिया गया । एक बार सुश्री उमा भारती जी, उस वक्त मुझको लगता है 1998 में स्पोर्टस एंड कल्चर मिनिस्टरों का सम्मेलन हुआ था, उसमें मुझे भी सौभाग्य मिला जाने का तो मैंने उनको कहा कि अभी आपका वक्तव्य मैंने बड़ी गंभीरता से सुना और आपका वक्तव्य सुनने से मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि आने वाले दिनों में और हमारी गिरावट होने वाली है। आज दुनिया का एक महाकुंभ फुटबॉल का फ्रांस में लगा हुआ है, यानी कि वर्ल्ड कप हो रहा था फुटबॉल का, तो मैंने व्यंग्य में कहा कि रोज सुबह–शाम–रात टी0वी0 खोलकर अपने मुल्क को खोजता हूं मगर अपना मुल्क कहीं नजर नहीं आता है । मैं वर्ल्ड फुटबॉल में, अब तो समझिए एशियन फुटबॉल तक में हम नहीं पहुंच पाते हैं । अब आप समझिए कि एक अरब पच्चीस करोड़ से भी ज्यादा की आबादी वाला मुल्क वर्ल्ड कप में पार्टिसिपेट नहीं करे, ओलम्पिक में उसकी उपलब्धि, एक बैडमिंटन को और एकाध गेम को छोड़कर अपनी उपस्थिति हम दर्ज नहीं करा पाते हैं । तो मेरे कहने का तात्पर्य है, मैं किसी भी तरह का टीका–टिप्पणी नहीं कर रहा हूं, यह जो वास्तविक स्थिति है, इस वास्तविक स्थिति को पक्ष और विपक्ष दोनों को समझना चाहिए और इस विभाग के तरफ ज्यादा तवज्जो देने की जरूरत है । माननीय मंत्रीजी, जब मैं 1995 में इस विभाग का प्रभारी मंत्री बना तो मैं कह सकता हूं कि जीरो से स्टार्ट किया था और

जब मैं जीरो से स्टार्ट किया तो बिना सरकार की राशि लिए हुए मैंने खेल सम्मान समारोह भी पहली बार आयोजित कराया, मैंने एशियन फुटबॉल भी कराया, मैंने जननायक कर्पूरी ठाकुर ऑल इंडिया गोल्ड कप का भी आयोजन कराया । मैं यह कह सकता हूं कि राशि चाहे जितनी भी मिल जाए, मगर काम करने की इच्छाशक्ति अगर नहीं होगी और स्पोर्ट्स माइंडेड और कल्चर माइंडेड आप नहीं होंगे तब तक चाहकर भी आप विकास नहीं कर पाइएगा । मैं एक उदाहरण आपको और देता हूं । मेरा कंस्टिच्युएंसी पहले हुआ करता था बहेड़ा । बेनीपुर उसका ब्लॉक भी है, सबडिविजन भी है । मैंने अपने विधायक कोष से 1997-1998 में एक आउटडोर स्टेडियम का निर्माण कराया । उसमें एक करोड़ दस लाख रूपया लगाया हमने और मैं कह सकता हूं कि बहुत सारे जिले को उस तरह का स्टेडियम नसीब नहीं है, मगर जब मैं विधायक नहीं रहा वहां, तब जब विधायक नहीं रहा तो उसकी दयनीय स्थिति देखकर समझिए कि रूलाई आ गई .....क्रमशः

टर्नः 21/कृष्ण/23.03.2018

श्री अब्दुल बारी सिद्दिकी : (क्रमशः) जब मैं विधायक नहीं रहा तो उसकी दयनीय स्थिति देखकर समझिये कि रूलाई आ गयी कि कोई देखनेवाला नहीं । कोई कुर्सी उखाड़ कर ले गया, कोई कुछ ले गया यानी कि सतत् एक्टीविटीज, अगर इस विभाग में स्पोर्ट्स एण्ड कल्चर जारी रहे तो बहुत सारी बुराईयां जो हैं समाज में, उससे बचा जा सकता है। मैं अक्सर कहा करता था कि फुटबॉल या जो दूसरे गेम्स हैं, फुटबॉल भी, 11 प्लेयर्स खेलते थे और आपने देखा होगा कि बहुत सारी अच्छी-अच्छी टीम दुनियां में, जिनके पास सुपर स्टार्स प्लेयर्स हैं, मगर वे हार जाते हैं और उनसे कमतर टीम जीत जाती है । वजह क्या है कि अगर एक सुपर स्टार बॉल को अपने बीच ही नचाना चाहे और गोल पोस्ट में फेंकना चाहे तो वह घेरा जाता है और उससे गोल नहीं हो पाता है । मगर जो कमजोर टीम है, एक दूसरे प्लेयर को पास देकर खेलती है तो वह टीम सकसीड करती है । वह गोल में तबदील करती है । उसी तरह से जिन्दगी में अगर स्पोर्ट्स को प्रायोरिटी दिया जाय, कल्चर को प्रायोरिटी दिया जाय और इसके महत्व को समझ कर इसको स्कूल से लेकर कॉलेज तक बढ़ाया जाय तो मुझको लगता है कि जिस व्यक्ति में खेल की भावना आ जाय या सांस्कृतिक लगाव आ जाय, वह जीवन के जिस क्षेत्र में भी जायेगा, मगर वह चाहेगा एक दूसरे का पास देकर खेलना । एक दूसरे की मदद करना । महोदया, अभी जो विभाग है । अब माननीय मंत्री जी खुद बतायेंगे कुछ, अभी ललित कला एकेडमी की स्थिति क्या है ? पता नहीं, गठन हुआ या नहीं हुआ ? बिहार सांस्कृतिक संगीत एकेडमी की क्या स्थिति है ? यह सब आप बेहतर जानते हैं, उस पर हम टीका-टिप्पणी नहीं करना चाहते हैं । मगर जब इसी राज्य में जब राशि नहीं थी

तब हमलोग बिहार सांस्कृतिक महोत्सव किया करते थे और उस सांस्कृतिक महोत्सव में गांव-गवई में जो हमारे कलाकार हैं, उनको प्रोपर प्रतिष्ठा नहीं मिलती है और जो हमारे लोक गीत हैं, लोक संगीत हैं, उनके कलाकार भी उपेक्षित हैं और उनको कोई बुलाता भी नहीं है । मगर आपकी सरकार में एक उल्टी व्यवस्था हो गयी है । आपकी सरकार तो विकास वाली सरकार है । आपकी सरकार जो सूरज चांद पर जानेवाली सरकार है । कहा न कि विकास वाली सरकार है तो जहां सांस्कृतिक मौसम में 5 हजार कलाकार गांव-गवई के वैसे कलाकार जिन्हें प्रतिष्ठा नहीं मिलती थी और विभिन्न कला क्षेत्र से जो जुड़े हुये थे उनको पटना बुलाते थे और उनका एक हफ्ते का कार्यक्रम इसी गांधी मैदान में होता था और उस गांधी मैदान में जो विद्यापति मंच भी बनता था, बिरसा मुण्डा मंच भी बनता था और 30 से 35 हजार आदमी 4 बजे सुबह तक देखते थे । हां, आपने तरक्की की कुछ । तरक्की की तो बिहार सांस्कृतिक महोत्सव को बंद कर दिया। बिहार सांस्कृतिक महोत्सव को बंद कर दिया तो आपने कौन-सा कार्यक्रम शुरू कराया । दशहरा में कार्यक्रम शुरू कराया और उसमें बड़े-बड़े नामचीन कलाकारों को बुलाया । हां बम्बईया कलाकार कहिये, मगर वे कलाकार हैं, बड़े कलाकार । अब एक को कितना दे रहे हैं ? किसी को दे रहे हैं 50 लाख रूपया, किसी को दे रहे हैं 70 लाख रूपया, किसी को दे रहे हैं 40 लाख रूपया और हम टोटल लिया था सरकार से 20 लाख रूपया और 50 लाख रूपया स्पौंसर कराया था और 70 लाख रूपया में 7 दिन का 5 हजार कलाकारों का प्रोग्राम कराया और उसमें उनका खाना-पीना, रहना-सहना सबकुछ था । मतलब हमारी जो संस्कृति जिसे उजागर होना चाहिए ।

(व्यवधान)

श्री संजय सरावगी : माननीय श्री शिवचन्द्र राम जी कहां हैं ?

श्री अब्दुल बारी सिद्दिकी: सरावगी जी, आपको लगता होगा कि इस भाषण में कोई तथ्य नहीं है। आपकी जो आदत पड़ गयी है, उस आदत को थोड़ा छोड़िये । अब आप वरीय सदस्य हो गये हैं ।

श्री संजय सरावगी : महोदय, हम तो केवल इतना ही बोले कि माननीय श्री शिवचन्द्र राम जी कहां हैं ? वे इस विभाग के मंत्री रह चुके हैं । हम तो इतना ही पूछ रहे थे ।

श्री अब्दुल बारी सिद्दिकी : महोदया, हमलोगों ने जननायक कर्पूरी ठाकुर ऑल इन्डिया गोल्ड कप कराया था । श्रवण जी भी कर्पूरी जी के पीछे-पीछे झोला लेकर घूमते थे । मगर इस जननायक कर्पूरी ठाकुर ऑल इन्डिया गोल्ड कप टूर्नामेंट जो था, वह गुम हो गया, सरकार बदली, गुम हो गया । भई, सरकार आती है, जाती है, जो बुनियाद हमने रखी, आप उससे अच्छा कराते । यह जो गांधी मैदान है । अब तो यह गांधी मैदान मेला के लिये हो गया। अब तो मेला के लिये ही एक तरह से गांधी मैदान फिक्स हो गया । जब हमलोग यहां पढ़ते थे, करबिगहिया क्रिकेट क्लब से खेलते थे तो उस गांधी मैदान में

क्लब को जगह आवंटित की गयी थी ताकि क्लब प्रैक्टिस कर सके । अब आप बताईये। बहुत सारी टीमें हैं उनको प्रैक्टिस करने की कोई जगह है क्या ?

सभापति (डा रंजू गीता) : आप अपनी समय-सीमा से 3 मिनट अधिक बोल चुके हैं ।

श्री अब्दुल बारी सिद्दिकी : महोदया, मुझको लगा कि हाउस सुनना चाहता है । इसलिए मैं सुना रहा था । जननायक कर्पूरी ठाकुर गोल्ड कप को आप स्टार्ट कीजिये और उसमें इन्डिया की जो लब्ध प्रतिष्ठित टीम आया करती थी उनको आप लायें । उसी तरह एशियन फुटबॉल टूर्नामेंट भी हम कराये थे । मैं आज क्या कमी है, क्या है, उस पर नहीं बोलूंगा।

महोदया, दो मिनट आपका वक्त लूंगा यदि आपकी इजााजत हो तो । दो मिनट लेकर अपनी बात समाप्त करते हैं । अभी जो प्रखंड लेवल पर स्टेडियम का निर्माण हो रहा है । मैं अगर होता तो उसको नहीं कराता । अब कहियेगा क्यों ? वह सबस्टैंडर्ड स्टेडियम है । जब भी कोई चलता है तो दूर-दृष्टि लेकर चलता है, कहीं उसमें अच्छा मैच कराया जाय । अच्छा मैच अगर कराना है तो आप उसमें नहीं करायेंगे तो इस वजह से आप दस ही स्टेडियम बनाईये, प्राईरिटी पर 10 ही बनाईये, 50 बनाईये मगर आप स्टैंडर्ड का स्टेडियम बनाईये । यदि आपके पास यहां दो स्टेडियम है, डिस्ट्रीक्ट में भी बहुत सारे हैं और बहुत सारे स्टेडियम सहयोग से भी बने हैं और उसको आगे बढ़ाया गया । तो आपका जो ऑफिस है बिहार राज्य खेल प्राधिकारण का, मेरी राय होगी कि उसको आप शिफ्ट कीजिये पाटलीपुत्रा स्पोर्ट्स कम्प्लेक्स में और इसको जो आपको बनाना है, बी0सी0ए0 के साथ आप समझौता कीजियेगा, मगर सिर्फ बी0सी0ए के भरोसे नहीं रहियेगा । बी0सी0ए0 में हम भी है एक अध्यक्ष । मगर बी0सी0सीआई0 के जो एक्सपर्ट्स हैं, वह भी आपको देंगे 4 से 5 करोड़ रूपया, ज्यादा भी दे सकते हैं । तो इन्टरनेशनल लेवल का एक अच्छा स्टेडियम बने तो जब यहां क्रिकेट का मैच होगा आई0पी0एल0 का या कोई टेस्ट होगा या वन डे होगा तो लोग जानेगा कि पटना भी क्या चीज है, पटना कहां है ।

महोदया, अंत में मैं इतना ही कहूंगा, मुझे इस बात की खुशी है कि जो कला संस्कृति से हमलोगों के इलाके की, संयोग से कहिये दोनों, एक तो पुराना जिला में दरभंगा जिला ही है और नया जिला में हजारी जी का जिला है ।

क्रमश :

टर्न-22/सत्येन्द्र/23-3-18

श्री अब्दुल बारी सिद्दिकी(क्रमशः) वहां के शारदा सिन्हा जी को पद्म विभूषण मिला और हमारे दरभंगा के हमारे विधान-सभा क्षेत्र के बड़े साईंटिस्ट मानस बिहारी वर्मा जी उनको पद्मश्री अवार्ड दिया गया, नवाजा गया । मैं तो चाहूंगा कि इसका जिक्र होना चाहिए था आपके प्रतिवेदन में और इस सदन की तरफ से उनके प्रति आभार व्यक्त करना चाहिए । उनको धन्यवाद देना चाहिए कि इनलोगों ने आपका नाम रौशन किया है और सम्मान समारोह जो होता है सिर्फ पदाधिकारियों के भरोसे रहियेगा तो पदाधिकारी आपको समझायेंगे बहुत तरह का, संयोग है कि अच्छे लोग हैं वहां, उसका उपयोग कीजिये और संसदीय कार्य मंत्री बैठे हैं यहां, और आप ही घटक के शौर्टकट से जो बने हैं उप मुख्यमंत्री जी तो उनको कहिये कि वे कला संस्कृति एवं युवा कार्य विभाग का बजट बढ़ायें और इस विभाग में टीम स्पिरिट से आप काम कीजियेगा तो यह विभाग तरक्की करेगा, तरक्की करेगा तो अन्य विभागों से ज्यादा आपका नाम होगा और अन्य विभागों से ज्यादा आप स्टेट के लिए जो है आप कुछ काम कीजियेगा और जो आने वाली पीढ़ी है, एक जमाना था जब लोग कहते थे खेलोगे कूदोगे तो बनोगे खराब और पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब, मगर अब मानसिकता बदल गयी है । अब जो है गार्जियन माँ पिताजी हैं वे अपने बच्चे को लेकर पहुंचते हैं एकेडमी में कि इसको भी कोचिंग दिलवाया जाय ताकि ये सचिन तेंदुलकर बने, धोनी बने बगैरह वगैरह, तो मैंने जितनी बातें कहीं, मैंने न किसी तरह का ये किया है, मगर विभाग को प्राथमिकता के सूची में लाना है और मुझको लगता है कि जो भी कार्यक्रम कीजिये, पहले उसमें अपने एम0एल0ए0 को ही जरा बुलाईए और उनको समझाईए उनको कहिये कि स्पोर्ट्स और कल्चर के प्रोग्राम में जाने के लिए, उसमें रूचि बढ़ाने के लिए कहिये और रूचि बढ़ेगी तो समझिये कि आने वाले पीढ़ी में हमारा स्पोर्ट्स और कल्चर में भले ही हम औद्योगिक राज्य हो या नहीं हों मगर हम स्पोर्ट्स कल्चर के मार्फत इस राज्य को दुनिया के नक्शे पर ला सकते हैं, यह कोशिश करना चाहिए, यही कहकर मैं अपनी बात को खत्म करता हूँ ।

श्री सुधीर कुमार उर्फ बंटी चौधरी: धन्यवाद सभापति महोदया, आज मैं कटौती प्रस्ताव के पक्ष में बोलने के लिए बाबा साहब की कृपा और सिकन्दरा की जनता के आशीर्वाद से खड़ा हुआ हूँ । मैं आज अपने आपको बहुत ही गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ कि आज युवा और कला संस्कृति पर बोलने के लिए मुझे मौका मिला है और मैं खुद भी युवा हूँ, हमारे राष्ट्रीय पार्टी के अध्यक्ष भी युवा हैं और इस सदन के प्रतिपक्ष के नेता भी युवा हैं। न जाने सत्तापक्ष के लोग युवाओं की भागीदारी की बात तो करते हैं पर एक युवा के जोश को, उनके हौसले को देखकर हतोत्साहित होकर उनकी अवहेलना करते हैं और बीच बीच में इस बात को उठाते हैं कि फलां होते, चिलना होते । अरे युवाओं को मौका

दीजिये, युवा खुद अपनी पहचान बना देगी, आप किसे बनाना चाहते, नहीं बनाना चाहते, ये निर्देश न दें । आज इस दिवस में हम लोग बात कर रहे हैं, शहादत दिवस के तौर पर युवा जो 24 साल में हंसते हंसते फांसी चढ़ गये, भगत सिंह की शहादत, राजदेव गुरू सुखदेव जी के हम समस्त सेनानियों को आज यह दिवस समर्पित हैं और आज मुझे युवा पर बोलने का मौका मिला है, मैं इसके लिए सदन का आभारी हूॅ । मैं सबसे पहले युवाओं के प्रेरणा श्रोत आध्यात्मिक गुरू विवेकानंद जी का स्मरण करता हूॅ, उनको नमन करता हूॅ और साथ ही साथ हम बिहार के युवाओं को जो कि हमारे बिहार में 60-70 प्रतिशत युवा बेहाल हैं, यहां पर जिस हाल में उच्च शिक्षा का और बेरोजगारी का आलम है कि लोग यहां से, युवा यहां से पलायन कर रहे हैं, यह बहुत ही गंभीर और सोचनीय विषय है । जैसा कि आप और हम सभी लोग जान रहे हैं कि जो बिहारी कलाकारों की अनदेखी हो रही है, उससे कोई लोग गुरेज नहीं कर सकते हैं, हर खेल में हमारा बिहार उज्ज्वल हो सकता था, आगे बढ़ सकता था पर यहां पर खेल का उच्च व्यवस्था नहीं होने के कारण, स्टेडियम नहीं होने के कारण, रंगशाला नहीं होने के कारण, ट्रेनिंग कोचों के नहीं होने के कारण आज हमारा बिहार है । चाहे खेल हो, सांस्कृतिक कार्यक्रम हो या फिल्म इंडस्ट्रीज हो, सभी जगह हमलोग पिछले पायदान पर खड़े हैं । सत्ता पक्ष के लोग बहुत तारीफ करते हैं सरकार की और कुछ बातें भूल जाते हैं कि अपने बगल में यू0पी0 और झारखंड में फिल्म इंडस्ट्रीज में फिल्म बनाने पर काफी मात्रा में सब्सिडी दी जाती है वहीं हमारे बिहार में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जिसके कारण बहुत से फिल्म यू0पी0 और झारखंड के बेस पर बन रहे हैं बिहार पर नहीं बन रहा है । अगर यहां पर भी सब्सिडी दिया जाय तो बिहार में भी फिल्म उद्योग का स्थापना हो सकता है और अधिक से अधिक यहां पर फिल्म इंडस्ट्रीज आयेगी तो फिल्म का सूटिंग होगा और अधिक से अधिक कलाकार आयेंगे तो उसके साथ टीम आयेंगे, इससे यहां रोजगार उपलब्ध हो सकता है । लोग राजगीर की बात करते हैं, मैं भी कहता हूॅ राजगीर में बनना चाहिए पर जमुई जिला के सिमुलतला एक रमणीय स्थल है, वहां पर फिल्म सिटी का निर्माण होना चाहिए और वह हिल स्टेशन के तौर पर भी जाना जाता है, वहां का दृश्य भी ऐसा है । मैं मांग करता हूॅ सदन के द्वारा सभापति महोदय आपके द्वारा कि वहां पर एक फिल्म इंडस्ट्रीज का निर्माण कराया जाय । मैं खासकर के आज युवा दिवस में हम युवाओं के लिए विपक्ष के लोगों से जो उन्होंने वादा किया था 2 करोड़ हम हर साल युवाओं को रोजगार देंगे, वह दो करोड़ तो नहीं दे पायें पर हम युवाओं में दर्द है, हम युवाओं में जो वादा किये थे, उस वादाखिलाफी के प्रति असंतोष है । जैसे कहा गया है कि -

‘जिस युवा ने पहनाया आपको जीत का माला,
आपने भी दिया हार,

हर नौजवान के हाथों में बेकारी का हालात,
हर सीने में असंतोष की धधक रही है ज्वाला,
हर युवा को कैसे धर्म और राजनीति के तहत दंगों में है डाला,
सभी युवाओं के भविष्य में लगा दिया है ताला,
बताईए क्या आपका ऐसे चलेगा राज्य का हाला ।'

तो ये युवाओं के जोश के, युवाओं के होश को आपलोग ललकारिये नहीं, क्योंकि -

'हम युवा कभी महक की तरह गुलों से उड़ते हैं,
कभी धूएं की तरह पर्वतों से उड़ते हैं,
ये कैचिया हमें क्या उड़ने से खाक रोकेगी,
हम पड़ोस से नहीं, हौसलों से उड़ते हैं ।'

युवा खेल और कला संस्कृति विभाग से मैं आग्रह करना चाहता हूॅ कि मेरा जमुई जो नक्सल प्रभावित इलाका है, वहां पर आदिवासी खासकर के हमारे विधान-सभा में जो अदिवासी युवक युवतियां हैं वे खेल में काफी अभिरूची लेते है और अच्छे अच्छे खासकर फुटबॉल में वहां पर बहुत अच्छे अच्छे खिलाड़ी है और अभी अभी बहुत ही शौक से कहना पड़ता है कि हमारे उसी क्षेत्र के होनहार युवा बी0एस0एफ0 के जवान शहीद हो गये । वहां पर एक मैदान है, मैं चाहता हूॅ सभापति महोदया आपके माध्यम से कि वहां पर शहीद सुनील मुर्मू के नाम से एक स्टेडियम का निर्माण कराया जाय ताकि उस तबके के लोग नक्सल क्षेत्र में न जाकर खेल और देश सेवा में जायें क्योंकि जैसा आप जानते हैं नक्सल प्रभावित इलाकों में अक्सर बेरोजगार युवाओं को बहकाया जाता है, उसको भटकाया जाता है और उसी तरफ ले जाया जाता है । लोग पेट के लिए, परिवार चलाने के लिए गलत कदम उठा लेते हैं, अगर उन्हें खेल मे अभिरूचि के तहत जोड़ा जायेगा तो मुझे पूरा विश्वास है कि वे लोग जमुई जिला और अपने गांव का भी नाम रौशन करेंगे साथ ही साथ मैं मांग करता हूॅ कि अपने तीनों प्रखंड, विधान-सभा के तीनों प्रखंड अलीगंज, सिकन्दरा और खैरा है, खैरा में जैसा कि लिस्ट में देख रहा हूॅ वहां स्टेडियम के निर्माण की बात हुई है, अलीगंज और सिकन्दरा को छोड़ दिया गया है तो कृपा कर उसे भी जोड़ने का हम आग्रह करते हैं और साथ ही साथ मैं रंगशाला थियेटर की भी मांग करता हूॅ कि जमुई जिला में कम से कम एक थियेटर और रंगशाला का निर्माण हो, जहां कलाकार जो स्थानीय कलाकार हैं, वह अपने कला के हूनर सीखेंगे, अनुभव लेंगे और उसका प्रदर्शन करेंगे । (क्रमश:)

टर्न-23/मधुप/23.03.2018

...क्रमशः...

श्री सुधीर कुमार उर्फ बन्टी चौधरी : सभापति महोदय, अब मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान खनन एवं भूतत्व विभाग की ओर आकृष्ट कराना चाहता हूँ । यह बहुत ही सौभाग्य की बात है कि जिस तरह से हमारे मंत्री महोदय विपक्ष में जब थे, हल्ला करते थे, शोर करते थे, टेबल तक उठाकर पटक देते थे पर न जाने क्या हुआ कि वे जब पक्ष में गये, सत्ता में काबिज हुये तो अपने पदाधिकारी तक से हाईकोर्ट के फैसले को भी लागू नहीं करवा पाये । हाईकोर्ट के फैसले का इन्होंने अवहेलना किया, हाईकोर्ट के दिशा-निर्देश को इन्होंने नहीं माना । यह अजब बात है, अजब विडम्बना है, हमलोग नये युवक क्या सिखेंगे ? यह बहुत ही शर्म की बात है कि हाईकोर्ट जैसे प्रतिष्ठित न्यायालय का खासकर विभाग के पदाधिकारी द्वारा यहॉ पर अवमानना होता है, इससे तो सरकार की किरकिरी हो ही रही है साथ-साथ हम जनता को, गरीब, कारीगर, मजदूरों को बहुत परेशानी हो रही है चाहे वह घर बनाने में हो या रोजी-रोजगार के लिये हो । खास करके अभी एक प्राप्त सूचना जो कल का है कि हाईकोर्ट के दिशा-निर्देश के द्वारा जमुई जिला में और सभी जिला में रिवर के द्वारा जो बालू उठाव हो रहा था, उसको बन्द कर दिया गया है लेकिन फिर भी कल पेपर में निकला था कि बुधवार को भी बालू उठाव हुआ है, कल भी हो रहा है और आज भी हो रहा है । यह बहुत ही दयनीय स्थिति है। हाईकोर्ट का तो छोड़ दीजिये, सरकार के पदाधिकारी और मंत्री भी जो फैसला करते हैं, नीचे के पदाधिकारी उसको नहीं मानते हैं और लाखो-लाख की लूट हो रही है, लाखो-लाख की वहॉ पर कालाबाजारी हो रही है । जिस तरह से नियम की बात करते हैं, सत्ता पक्ष के लोग नियम और विकास की बात करते हैं, बात हुई थी कि बंदोवस्ती के बाद सभी जगह धर्मकॉटा लगाया जायेगा, सभी जगह हाथ से उठाव होगा पर कहीं भी ऐसा देखा नहीं गया है, जे0सी0बी0 और पोकलेन से उठाया जा रहा है । बिना धर्मकॉटा का ट्रक पर अवैध वसूली करके कालाबाजारी किया जा रहा है, हमें यह देखने में आता है । खास करके खनन एवं भूतत्व में जो राजस्व की हानि हो रही है, इसका जिम्मेदार कौन है ? जैसा कि हम बताना चाहते हैं.....

सभापति (डॉ0 रंजु गीता) : अब आप समाप्त करेंगे ।

श्री सुधीर कुमार उर्फ बन्टी चौधरी : एक मिनट, महोदया । जमुई जिला में 4891.94 लाख के राजस्व वसूली का लक्ष्य था और मात्र 505 लाख यानी कि 10 परसेंट वसूली हुई है, इसका कौन भरपाई करेगा, सरकार के राजस्व का नुकसान हुआ है, उसको कौन देगा ?

साथ-ही-साथ, मैं एक बात बोलना चाहता हूँ कि पंचायती राज के लिये अपने बापू के सपनों का ग्राम स्व-रोजगार और राजीव गॉधी के सपनों को साकार करने के लिये जो पंचायती राज की व्यवस्था की गई है, उसमें काफी लूट-खसोट मचा हुआ

है । पंचायत सरकार भवन की बात करते हैं, पंचायत सरकार भवन में कहीं भी चहारदिवारी नहीं है, कहीं भी बिजली-बत्ती लगाया गया है, चहारदिवारी नहीं होने के कारण उसको खतम कर दिया गया है, मैं आग्रह करना चाहता हूँ कि चहारदिवारी का निर्माण कराया जाय ।

सभापति (डॉ0 रंजु गीता) : माननीय सदस्य मिथिलेश तिवारी जी, आपका समय 11 मिनट है ।

श्री मिथिलेश तिवारी : सभापति महोदया, आज मैं 2018-19 के लिये पेश कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के कटौती प्रस्ताव के विरोध में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूँ और इसके लिये मैं बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी, माननीय उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी जी और बैकुण्ठपुर की महान जनता का मैं हृदय से आभारी हूँ जिसके चलते आज मुझे यहाँ बोलने का समय मिला है ।

महोदया, आज मैं आदरणीय सिद्दिकी साहब को सुन रहा था और सिद्दिकी साहब जब बोल रहे थे तो मुझे लगा कि प्रधानमंत्री जी के मन की बात का असर बहुत जबर्दस्त सिद्दिकी साहब पर हुआ है । चूंकि आज इन्होंने खुलकर अपने मन की बात कही है और मैं देख रहा था कि इनके मन में बहुत दिनों से जो गुबार था, उसको आज इन्होंने बड़े ही अच्छे शब्दों में इस सदन में रखा है । महोदया, चूंकि आज शायद नेता प्रतिपक्ष रहते तो सिद्दिकी साहेब आज भी नहीं बोल पाते, सिद्दिकी साहब ने खुद ही स्वीकार किया कि जब ये वित्त मंत्री थे तब भी बजट नहीं बढ़ा पाये, जब ये कला संस्कृति मंत्री थे तब भी नहीं बढ़ा पाये और जितनी बात इन्होंने कही, मैं बड़े ही विनम्रता से सिद्दिकी साहब से पूछना चाहूंगा कि एक विषय इन्होंने नहीं बताया कि आखिर लालू प्रसाद जी को बी0सी0ए0 का अध्यक्ष क्यों बनाया ? क्योंकि लालू प्रसाद जी तो कोई इंटरनेशनल खिलाड़ी भी नहीं थे....

श्री अब्दुल बारी सिद्दिकी : महोदया, जब इन्होंने पूछा है तो जवाब भी ये ले लें । महोदया, मिथिलेश तिवारी जी स्पोर्ट्स में थोड़ा इंटरेस्ट रखते हैं मगर स्पोर्ट्स अब इनका गौण हो गया है, इनपर राजनीति ज्यादा हावी हो गई है । जब स्पोर्ट्स में राजनीति आ जाय तो स्पोर्ट्स बिगड़ जाता है और जब राजनीति में स्पोर्ट्स भावना आ जाय तो राजनीति में निखार आती है । मगर ये जब समझ रहे हैं कि बी0सी0ए0 का अध्यक्ष इन्होंने क्यों बनाया, आप नहीं थे मिथिलेश तिवारी जी, उस वक्त जितने क्रिकेटर झारखंड से लेकर यहाँ के थे, उन सबलोगों ने पहले मुझसे मिलकर कहा कि लालू जी को बना दीजिये बी0सी0ए0 का अध्यक्ष, हमने कहा कि वे नहीं बनेंगे । फिर उनलोगों ने कहा कि एक बार चलकर बात तो कर लीजिये, अब मेरे साथ मजबूरी कि अगर मैं उनके साथ नहीं जाता.....

(व्यवधान)

श्री मिथिलेश तिवारी : महोदय, मेरा समय बर्बाद हो रहा है । माननीय सिद्दिकी साहब, मैं खुद बताता हूँ । कृपाकर मेरी बात सुनी जाय । महोदया, जो सिद्दिकी साहब ने मेरा समय लिया है, उसको मेरे समय में जोड़ दिया जायेगा ।

महोदया, बिहार का एक बड़ा ही गौरवशाली इतिहास रहा है और इस बिहार का इतिहास ऐसा गौरवशाली रहा है, भगवान श्रीराम को भी माँ जानकी को लेने के लिये बिहार आना पड़ा था । ऐसा हमारा बिहार है, महोदया । इस बिहार के साथ डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, रामधारी सिंह दिनकर, फनीश्वर नाथ रेणु, बाबू वीर कुँवर सिंह, सम्राट अशोक, चाणक्य, चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, आर्यभट्ट, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, सिखों के दसवें गुरू गोविन्द सिंह जी, जय प्रकाश नारायण जी, भिखारी ठाकुर, महेन्द्र मिश्र, बिस्मिल्लाह खॉं, सच्चिदान्द सिन्हा, मंडन मिश्र जी, विद्यापति जी, नालन्दा, विक्रमशीला, न जाने कितने ऐसे महान विभूति और बड़ा एक इतिहास इस बिहार का रहा है, महोदया, जिस बिहार से हमलोग प्रतिनिधित्व कर रहे हैं ।

महोदया, कला संस्कृति विभाग के उपर आज चर्चा हो रही है । महोदया, सिद्दिकी साहब की कुछ बातों का समर्थन भी मैं करूंगा कि चाहे कोई भी सरकार हो कला, संस्कृति और युवा विभाग पर विशेष ध्यान होना चाहिये क्योंकि जबतक युवा तैयार नहीं होगा तबतक राज्य आगे नहीं बढ़ेगा और युवा में ही हम सबों का चेहरा दिखना चाहिये । महोदया, हम सभी जिस संस्कृति की बात करते हैं, वह संस्कृति किसमें कितनी है, किसमें कितनी होनी चाहिये, इसपर भी चर्चा होनी चाहिये । महोदया, एक यह भी संस्कृति है कि जब हमलोग उधर बैठा करते थे और माननीय मुख्यमंत्री जी ने बिहार में जब शराबबंदी लागू किया तो हमलोगों ने बिहार के हित में उसका समर्थन करने का काम किया । महोदया, यह हमारी संस्कृति थी कि जब प्रधानमंत्री जी ने नोटबंदी लागू किया तो मुख्यमंत्री जी उस समय हमलोगों के विरोध में बैठे थे, लेकिन माननीय मुख्यमंत्री जी ने नोटबंदी का समर्थन किया । यह हमारी संस्कृति है । लेकिन आज हमारे राष्ट्रीय जनता दल के मित्र बोल रहे थे, कहॉं गई वह संस्कृति ? मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि 1995 में जब बिहार की जनता ने आपको मौका दिया, बिहार की जनता ने आपको इसलिये मौका दिया कि गरीब का बच्चा एक अच्छे स्कूल में पढ़े, बिहार की जनता ने आपको चरवाहा विद्यालय खोलने के लिये मौका नहीं दिया था । यह एक बड़ा सवाल है, इसका जवाब आज तक विपक्ष के लोगों ने नहीं दिया । महोदया, दो साल तक तो माननीय सिद्दिकी साहब वित्त मंत्री के रूप में थे और वित्त मंत्री के रूप में बहुत सारा चीज ये कर सकते थे लेकिन उसका प्रयास भी इन्होंने नहीं किया ।

महोदया, राज्य के जितने भी खेल मैदान थे, सभी खेल मैदानों की हालत क्या हो गई थी ? खटाल चल रहे थे खेल मैदानों में । खेल मैदानों को खटाल से मुक्त

कराने का कार्य माननीय नीतीश कुमार जी और एन0डी0ए0 की सरकार ने किया और आज प्रत्येक प्रखंड में, सिद्दिकी साहब कह रहे थे कि मेरी चलती तो मैं प्रखंडों में स्टेडियम नहीं बनाता । मैं पूछना चाहूंगा कि अगर प्रखंडों में स्टेडियम नहीं बनेंगे तो गॉव और गरीब के लड़के खेलने कहॉं जायेंगे ? वे सभी लड़के आकर मोईनुल हक स्टेडियम में नहीं खेल सकते हैं । इसलिये अगर माननीय मुख्यमंत्री जी ने इसका संकल्प लिया है कि बिहार के सभी प्रखंडों में हम स्टेडियम बनायेंगे, इसकी प्रशंसा होनी चाहिये और स्टेडियम बनना चाहिये, भव्य बनना चाहिये । हमारे नौजवानों को खेलने का अवसर मिलना चाहिये । महोदया, मैं मोईनुल हक स्टेडियम के बारे में कहना चाहूॅंगा, क्रिकेट की बात बार-बार होती है, बिहार में में इतनी प्रतिभा है कि आज जब आई0पी0एल0 की निलामी हो रही थी तो इस आई0पी0एल0 के निलामी में बिहार का एक खिलाड़ी जिसको......

(व्यवधान)

टर्न-24/आजाद/23.03.2018

श्री मिथिलेश तिवारी : ईशान किशन जो बिहार का खिलाड़ी है, वह मुम्बई इंडियन के लिए दूसरे नम्बर पर 6.02 करोड़ रू0 में खरीदा गया महोदया । यह बिहार की ताकत है । महोदया, यह ताकत कहां से मिलती है, यह ताकत हमारे बिहार के धरती से मिलती है और यह ताकत हमें चापाकल चलाकर के उस पानी से हमलोगों ने यह ताकत अर्जित की है और वह ताकत इतनी बड़ी है कि वह किसी बिसलियरी के पानी में वह ताकत नहीं है जो बिहार के चापाकल के पानी पीकर के हमारे बच्चे जो प्रदर्शन करते हैं महोदया । कहा जाता है कि कुछ हुआ नहीं, पटना के राजवंशी नगर में जो विद्युत बोर्ड कॉलोनी का फिल्ड है, उस फिल्ड की क्या स्थिति थी, उस फिल्ड पर बहुत भव्य और सुन्दर स्टेडियम बना है, वहां पर बहुत सुन्दर पार्क बना है महोदया । बिहार के तमाम ऐसे जहां खटाल चलते थे, जहां अतिक्रमण था, उसको मुक्त कराकर के सरकार ने वहां पर पार्क बनाने का काम किया है । हमारे बिहार में खिलाड़ियों की नियुक्ति नहीं होती थी, बड़े लम्बे समय से बिहार के कई गणमान्य लोग खेल मंत्री रहें, कभी सीधी नियुक्ति नहीं होती थी । अगर किसी ने सीधी नियुक्ति किया तो वह बिहार के नीतीश कुमार जी ने, एन0डी0ए0 की सरकार ने किया है, यह काम करके हमलोगों ने दिखाया है महोदया।

महोदया, यहां चरवाहा विद्यालय की बात होती है, यहां पर केन्द्रीय विश्वविद्यालय की बात भी करनी चाहिए । महोदया, मैं कहना चाहूॅंगा कि बिहार के गांवों में गरीब का लड़का जब पैदा होता है तो उसका जो परिवार है, वह सपना देखता है कि हमारा बच्चा बड़ा होगा, बड़े जगह जाकर पढ़ेगा । वह कभी कोई सपना बिहार

का कोई गरीब नहीं देखता है कि हमारा बच्चा बड़ा होगा और वह चरवाहा विद्यालय में पढ़ेगा, यह सपना जिसने देखा, उसने बिहार को बर्बाद कर दिया । बिहार को उन्होंने रसातल में पहुँचाने का काम किया । यह सपना माननीय मुख्यमंत्री जी ने देखा, एन0डी0ए0 ने देखा और बिहार में केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोलकर के दुनिया को बिहार आने के लिए मजबूर कर दिया, यह काम हमलोगों ने करके दिखाया है । महोदया, ये लोग कहते हैं और मैं तो कहूँगा कि आपने 15 साल राज किया, फिर आप इधर भी थे और सवाल उठाते हैं, मैं तो कहूँगा कि -

इधर-उधर की बात न कर, यह बता कि कारवां कैसे लुटा,
मुझे राहगीरों से गिला नहीं, तेरी रहबरी का सवाल है ।

यह आपको बताना पड़ेगा । महोदया, आजकल बड़ी चर्चा होती है डबल इंजन की, जब से डबल इंजन लगा है तो कई लोगों की सांसे फूल गई है ....

सभापति(डॉ0 रंजू गीता) : माननीय सदस्य, अब आप जल्द समाप्त करेंगे ।

श्री मिथिलेश तिवारी : महोदया, मैं यह पूछना चाहता हूँ कि यहां भी जब सरकार थी तो डबल इंजन की सरकार थी लेकिन उस सरकार के एक इंजन का पूरा रिंग डाऊन हो गया था, लेकिन अभी जो सरकार बनी है, वह डबल इंजन की सरकार है और इसका रिंग इतना चार्ज है कि यह डबल इंजन की सरकार बिहार को बुलंदी पर ले जायेगी, हम इसके लिए काम कर रहे हैं । महोदया, आजकल एक उप चुनाव के रिजल्ट से कुछ लोग बड़े उत्साही हो गये हैं । मैं उनको कहना चाहूँगा कि आप घबराईए नहीं, मैं माननीय अटल जी की एक कविता पढ़कर सुना देता हूँ, अटल जी ने लिखा है -

क्या हार में, क्या जीत में, किंचित नहीं भयभीत मैं,
संघर्ष पथ में जो मिले, यह भी सही, वह भी सही ।

मैं इस मंत्र को लेकर आगे बढ़ रहा हूँ । लेकिन महोदया, आज कला संस्कृति को लेकर बात कर रहा हूँ । महोदया, आपने कहा कि आपका समय खतम हो गया, मैं अंतिम पंक्ति पढ़कर के और अपने क्षेत्र के संबंध में बात कह कर अपनी बात खतम करूँगा । मेरे क्षेत्र बैकुण्ठपुर में जहां पर कभी पाण्डव ने राजसूय यज्ञ किया था और यहां पर सूपन भगत जैसे बहुत बड़े सन्त के बारे में कुछ सोचने की जरूरत है, सरकार को उसके लिए कुछ काम करना चाहिए । दिघवाघर का विकास होना चाहिए, सिंहासनी धाम का विकास होना चाहिए, डुमरिया प्राचिन शिव मंदिर का विकास होना चाहिए और अस्सीघाट, बनारस में विकसित हो गया तो बैकुण्ठपुर के सत्तरघाट का विकास होना चाहिए, यह मैं कहना चाहता हूँ ।

सभापति(डा0 रंजू गीता) : अब आपका समय समाप्त हो गया । माननीय सदस्य श्री ललन पासवान जी, आपका समय दो मिनट है ।

श्री ललन पासवान : महोदया, थोड़ा समय बढ़ा दीजियेगा । महोदया, माननीय नीतीश कुमार और सुशील कुमार मोदी जी की अगुवाई में बिहार विकास के रास्ते पर है । माननीय तीनों मंत्रियों को मैं बधाई देना चाहता हूँ कला,संस्कृति मंत्री, पंचायती राज और खान एवं भूतत्व को । महोदया, बिहार देश का प्रयोगशाला और पाठशाला रहा है और यह कई धर्मों का प्रयोगशाला और पाठशाला रहा है और अद्भूत कला, संस्कृति और परम्पराओं का विरासत रहा है । लेकिन हम अपनी पूरी विरासत आज कई जगहों पर जिन विरासतों के लिए यह बिहार पहचाना जाता रहा है पूरे दुनिया और देश में, उसपर कई तरह के संकट रहे हैं और साथियों ने कई तरह की व्याख्या की लेकिन मेरे पास लम्बा समय नहीं है कि हम इन विरासतों पर चर्चा करूं ।

महोदया, हम जहां से आते हैं कैमूर, रोहतास पूरे पहाड़ पर कैमूर की पहाड़ियों पर मध्यप्रदेश, झारखंड के बाद पूरे यूरोप में , पूरी दुनिया में यूरोप के बाद, भारत में मध्यप्रदेश, झारखंड और बिहार शलाश्रय और शैलचित्र पाये जाते हैं, सैकड़ों कैमूर के वादियों में और पहाड़ों में, गांवों में पाये जाते हैं । कोई उसको देखने वाला नहीं है । मैं माननीय मंत्री जी से आग्रह करूंगा, मैं पुरातत्व विभाग के भारत सरकार के मंत्री श्री महेश शर्मा जी से मिला, पुरातत्व विभाग के दिल्ली के डी0जी0 से मिला, लेकिन इस विरासत को कोई सुरक्षित करने वाला नहीं है, हम आग्रह करेंगे कि उसको देखना चाहिए । शेरशाह शूरी का विरासत आज संकट में है और शेरशाह शूरी के विरासत पर आज ग्रहण है । रोहतासगढ़ के किले पर ग्रहण लगा हुआ है ।

(इस अवसर पर माननीय अध्यक्ष महोदय ने आसन ग्रहण किया)

महोदया, शेरगढ़ के किले पर ग्रहण है और मैंने कहा कि कई हमारी विरासत पूरे कैमूरांचल में पड़ी हुई है । इसके लिए मैं कहना चाहूँगा कि बिहार सरकार और भारत सरकार का कला, संस्कृति मंत्री से भी आपकी नजर पड़नी चाहिए, जो आपकी धरोहर है, उसको बचाने की आज जरूरत है। पूरा शेरशाह का तालाब इतना गन्दा है, मैंने एक दिन बोला था पिछले दिनों, अगर हम में से कोई आदमी उसमें कूद जाय तो हमारी बात छोड़िए, पशु कूद जाय, पानी पीने कुत्ता गिर जाय तो वह मर जायेगा, वहां पर इतनी गन्दगी है ।

हमारे यहां स्टेडियम है । हमारे बिहार का कोई नेता जायेगा, माननीय मुख्यमंत्री .....

अध्यक्ष : अब आप समाप्त कर दीजिए ।

श्री ललन पासवान : एक मिनट महोदय, उस स्टेडियम का यह हालत है, लगता है कि सासाराम का कूड़ा दान है और कूड़ा उसी सासाराम स्टेडियम में गिरता है, इसका निर्माण होना चाहिए। मेरे यहां अखाड़ा चलता है महम्मदपुर गांव है, 50 साल से वहां पर कार्यक्रम हो रहा है, मैं भी वहां लगातार 10 वर्षों से जाता हूँ । वहां स्टेडियम के लिए हम माननीय मंत्री जी

से मांग करते हैं । रेरिया हाईस्कूल 10 प्लस 2, माननीय मंत्री जी को लिखकर दिया भी है और खेल-कूद के लिए वहां पर स्टेडियम का निर्माण कराने की कृपा करेंगे । बहुत,बहुत धन्यवाद ।

अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री अरूण कुमार जी, दो मिनट में । आपका समय सिद्दिकी साहेब पूरा लिये हैं, इसलिए दो मिनट में ।

श्री अरूण कुमार (75) : महोदय, कला, संस्कृति विभाग के कटौती प्रस्ताव के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ । महोदय, मैं जानकारी देना चाहता हूँ कि हम जहां से आते हैं, सहरसा विधान सभा जहां महागठबंधन के लोगों ने महागठबंधन की सरकार में सबसे ज्यादा वोट वहां के लोगों ने दिया है और उसका एक ही कारण था कि हमारे आदरणीय नेता श्री लालू प्रसाद यादव के कृपा से लोगों ने मुझको वोट दिया, मैं अपने नेता को अदाब, नमस्कार, प्रणाम करना चाहता हूँ और हम सहरसा विधान सभा के भाई-बहनों को भी प्रणाम करना चाहते हैं क्योंकि हम उनके कृपा से विधान सभा आया हूँ । मैं कला, संस्कृति विभाग के चार निदेशालय पर मुख्य रूप से बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। संग्रहालय निदेशालय, सांस्कृतिक, कला, युवा कल्याण निदेशालय और कला,संस्कृति के पक्ष में मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ । महोदय, आज चार जो निदेशालय है, जहां पर एक भी पदाधिकारी पदस्थापित नहीं हैं । कनीय पदाधिकारी द्वारा घाटे में और निरस के रूप में यह विभाग चल रहा है और सरकार इस विभाग को केवल किताब में लिखकर रखे हुए हैं, इस विभाग का कोई भी उपयोग नहीं हो रहा है । महोदय, हम बताना चाहते हैं कि आज भारत का जो कला, संस्कृति है, आज भारत में विदेशी लोग आते हैं, यहां के कला, संस्कृति को देखने आते हैं, चाहे वह एलोड़ा का गुफा हो, चाहे अजन्ता का गुफा हो, चाहे वह ताजमहल हो, चाहे वह शिशमहल हो, चाहे वह हवा महल हो, चाहे पटना का गोलघर हो, चाहे नालन्दा का खंडहर हो या बोधगया का मंदिर हो, चाहे वैशाली का स्तूप हो, उसको केवल देखने आते हैं । जो हमारे आज भाई लोग अपना वाहवही ले रहे हैं, हम उनको आगाह कर देते हैं कि आज दलित परिवार के लोग, पिछड़े परिवार के लोग, अकलियत परिवार के लोग जिन्होंने करनी-बसूली से, छेनी से, हथौड़ी से भारत के संस्कृति को कूट-कूट कर बैठकर के उन्होंने उसको बनाया, आज विदेशी लोग आते हैं उसको देखने के लिए, वह नहीं आते हैं टाटा-बिरला के फैक्ट्री को देखने के लिए, उनके कल-कारखाने को देखने के लिए नहीं आते हैं । भारत का संस्कृति क्या है, खेत-खलिहान है, गरीब-गुरबा का है, झऊआ, पटेल, बथान में जो हमारे पुरखे रहे हैं, चाहे वह जाति का कमात हो, सोनार हो, चमाड़ हो, तेली हो, बनिया हो, जिन्होंने गौ पालन करके, सुअर पालन करके, बकरी पालन करके, खेत-खलिहान में काम करके अपना जीवन यापन किया है ।

..... क्रमशः .....

टर्न-25/अंजनी/दि0 23.3.18

श्री अरूण कुमार : क्रमशः.... आज भारत का संस्कृति वही संस्कृति है । आज जो लोग तमगा ले रहे हैं, आज अम्बेदकर को अपमानित करने वाला यही हिन्दुस्तान है, जो एक हिन्दू दूसरे हिन्दू को जिस ढंग से अपमानित किया, आज बाबा भीम राव अम्बेदकर जिनकी दुनिया में किताबें चल रही है, लॉ की किताबें और बाबा भीम राव अम्बेदकर को वही सामंती लोग, उच्च घराने के लोग अपमानित किया । बॉम्बे हाईकोर्ट जिस रोज ज्वायन किया, जज साहेब उठकर भाग गये, कुर्सी गिर गया, गाउन गिर गया और वह हिन्दु धर्म छोड़कर बौद्धिष्ट हो गये । आज जो लोग तमगा ले रहे हैं, कल 22 तारीख को गांधी शताब्दी मना रहे थे, गांधी की हत्या करने वाला वही हिन्दु है, जिसका लखनऊ में मंदिर बन रहा है और वे लोग खेती कर रहा है पहले, कोई मुसलमान उसको नहीं मारा, अम्बेदकर को कोई मुसलमान अपमानित नहीं किया, इंदिरा गांधी की हत्या कोई मुसलमान ने नहीं किया, मुसलमान के बारे में ये लोग हंगामा करते हैं । मैं कहना चाहता हूँ कि आज भारत की संस्कृति को सहेज करके गरीब-गुरबा, दलित-पिछड़े के लोगों को पहले नहीं रखा, आज हम अपने नेता को धन्यवाद देते हैं कि वे आज भारत के एसेम्बली के इतिहास में, बिहार के एसेम्बली के इतिहास को जिस लाल अक्षरों से लिख दिया, पहले उतने तादाद में दलित, पिछड़ा, अकलियत के बेटा-बेटी कभी नहीं आया था, इसके लिए हम अपने नेता को धन्यवाद देते है । आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपका भी हम आभारी हैं । जय हिन्द-जय महागठबंधन ।

अध्यक्ष : आपको भी धन्यवाद । माननीय सदस्यगण, अब सरकार का उत्तर होगा । माननीय मंत्री, कला, संस्कृति एवं युवा विभाग ।

सरकार का उत्तर

श्री कृष्ण कुमार ऋषि, मंत्री : अध्यक्ष महोदय, आज कला, संस्कृति विभाग का बजट है । कला, संस्कृति विभाग के बजट के इस अवसर पर जितने हमारे माननीय विधायकगण इस बजट में सहभागिता निभाये हैं, मैं उनका आभार प्रकट करता हूँ। अध्यक्ष महोदय, मैं आपका सबसे ज्यादा आभार प्रकट करता हूँ, कितना संयोग है कि कल बिहार दिवस था और आज कला, संस्कृति विभाग का बजट है । वैसा संयोग है कि कल बिहार के हम तमाम् बिहारवासियों को एक बिहार की अपनी इतिहास, अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता के बारे में कल ही माननीय बिहार के मुख्यमंत्री , उप मुख्यमंत्री जी ने भारत के उप राष्ट्रपति जी को बिहार में बुलाकर एक अच्छा समारोह करके, बिहार के लोगों में ही नहीं, पूरे देश के लोगों में अपनी संस्कृति और सभ्यता का एक पहचान दिलाने का काम किया है । आज कला, संस्कृति विभाग का बजट है । बहुत हमारे माननीय सदस्यों ने इस विषय को रखा है। अध्यक्ष महोदय, किसी भी देश की गौरव में संस्कृति का एक